ओशो सुगंधा

फरवरी 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

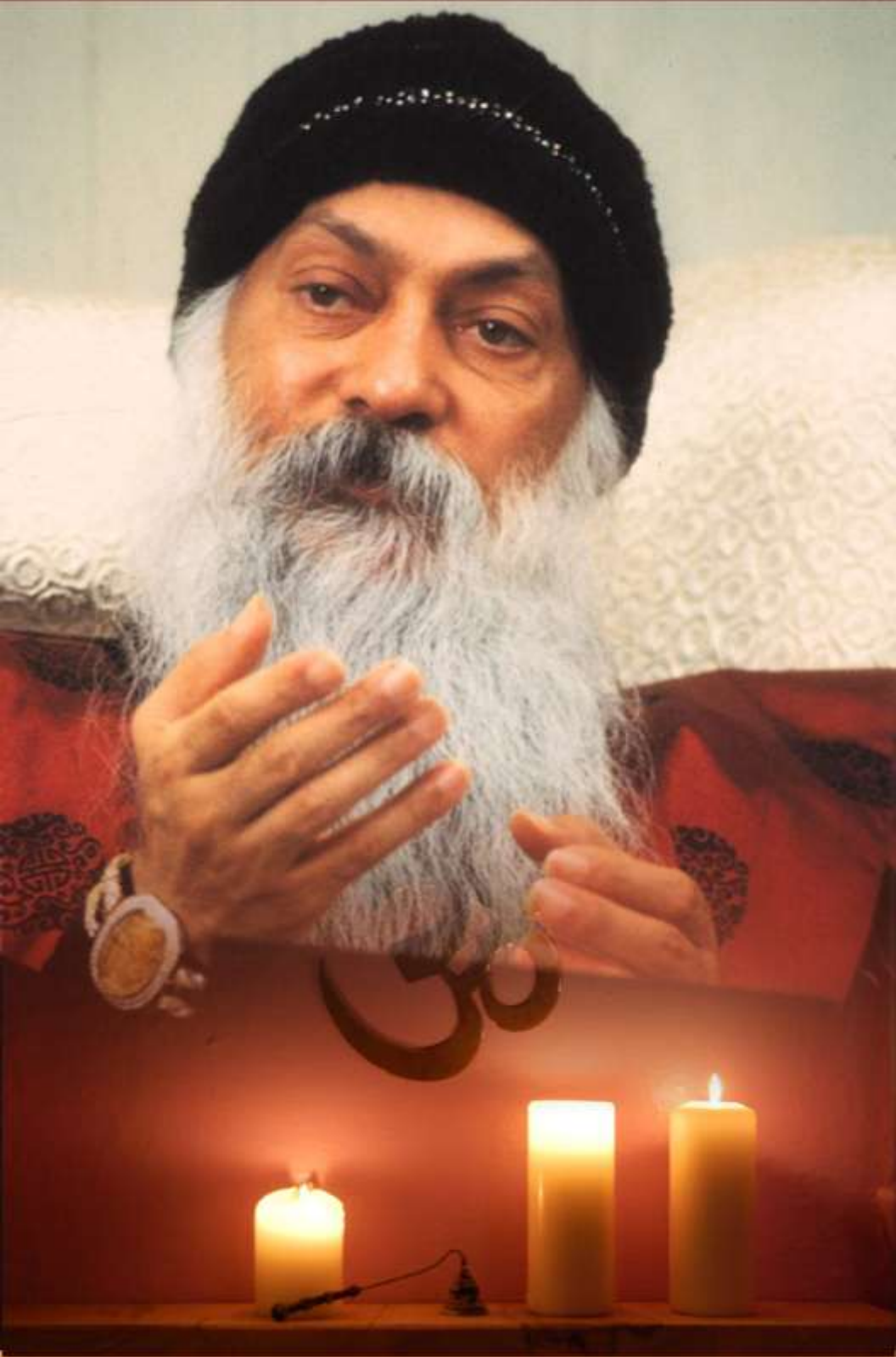

- किससे करें मैत्री? किससे नहीं?
- मनुष्य : एक द्वंद्व
- मैत्री भाव का विकास कैसे?
- राग और द्वेष

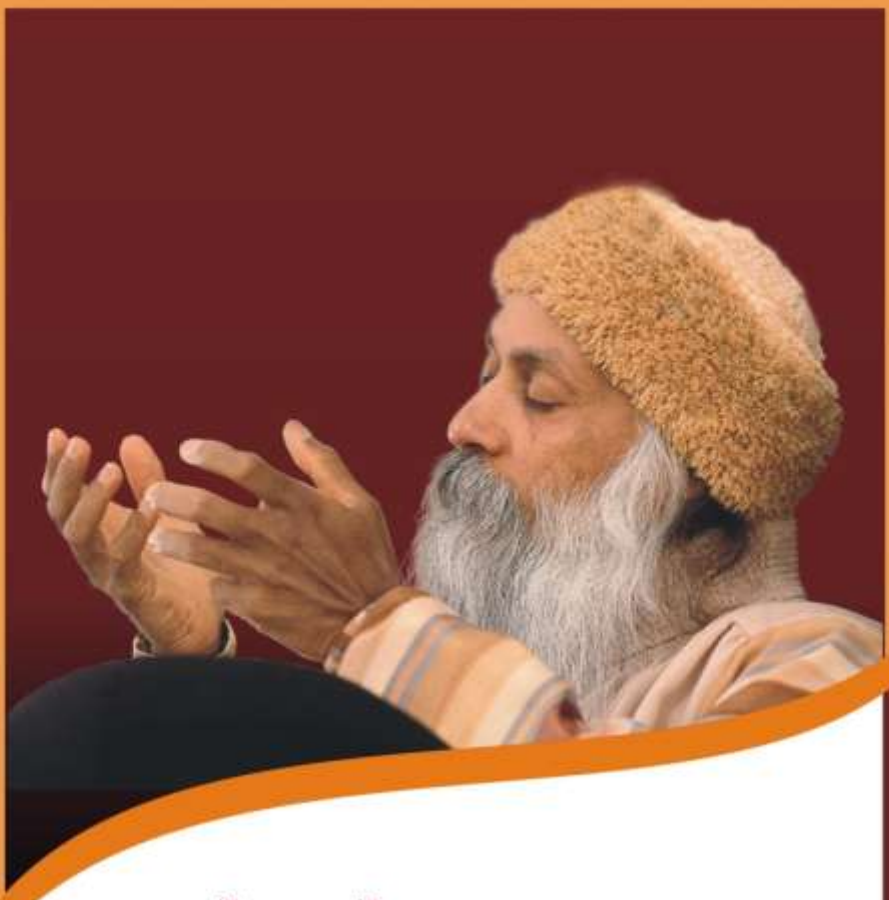

ओशो सुगंधा

वर्ष-2/अंक-14 फरवरी 2023

पठनीय एवं श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरू ओशो के चरणों में समर्पित

◆ प्रेरणास्त्रोत
स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं मा अमृत प्रिया

◆ संपादन एवं संकलन
मा मोक्ष संगीता

◆ अन्य सहयोग
मस्तो बाबा

◆ कला एवं साज सज्जा
आनंद संदेश

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय
मासिक ई-पत्रिका की **विशेषताएं**

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे

ऑडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडियो सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वीडियो	इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह वीडियो देख सकते हैं
व्हाट्स ऐप	इस बटन को स्पर्श करते ही आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं
गुगल मैप	इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गुगल मैप खुल जाएगा
पुस्तक	इस बटन को स्पर्श करते ही आप PDF में पढ़ अथवा डाउनलोड कर सकते हैं
वेब साइट	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे उस वेब साइट पर जा सकते हैं
क्वोरा	इस बटन को स्पर्श करते ही आप सीधे हिंदी में क्वोरा पर पढ़ सकते हैं

अनुक्रम

1. मैत्री या शत्रुता से आप प्रभावित? 05
2. मनुष्य : एक द्वंद्व 06
3. किससे करें मैत्री?किससे नहीं? 10
4. राग और द्वेष 13
5. मैत्री भाव का विकास कैसे? 15
6. पति–पत्नी के बीच मैत्री साधो 18
7. इस माह का ध्यानः श्वास को शिथिल करो 19
8. **Insight into sanyas name** 20
9. **'ओशो : हाशिए पर मुखपृष्ठ'** 22
10. बंदरिया से शादी 24
11. प्रेम परमात्मा है 26
12. आत्मा की अमरता 29
13. स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी के वीडियो 30
14. क्वोरा लिंक 31
15. सर्वांगीण जीवन का मित्रतापूर्वक स्वीकार 32
16. म्यूजिक एलबम – आओ पुकारें **ओशो** 33
17. हंस दो जरा 34
18. आगामी कार्यक्रम 35
19. जीवन को मस्ती से कैसे भरें? 36
20. भगवान के वचनों ने मेरा अंतस जगा दिया 41
21. समाचार 44
22. संपर्क सूत्र 48
23. पूर्व के संस्करण 49

मैत्री या शत्रुता से आप प्रभावित?

–ओशो

यह हम विचार करें कि हमारी भाव की परिधि किन बातों से प्रभावित होती है और संचालित होती है। क्या हमारे जीवन में मैत्री की जगह वैर, वैमनस्य ज्यादा प्रमुख है? क्या हम मैत्री की बजाय दुश्मनी से, शत्रुता से ज्यादा संचालित होते हैं? क्या हम ज्यादा प्रभावित होते हैं?क्या हम ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं? क्या हमारे भीतर शक्ति का उदभव ज्यादा होता है?

जैसा मैंने पीछे कहा, क्रोध में शक्ति है। लेकिन मैत्री में भी शक्ति है।

–ध्यान सूत्र–5

मनुष्य : एक द्वंद्व

–ओशो

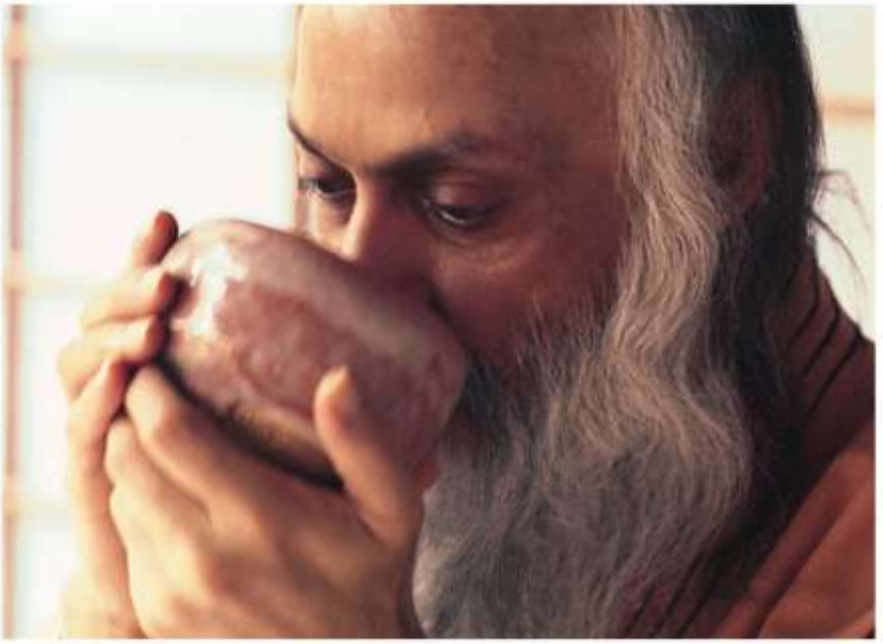

मनुष्य है एक द्वंद्व। प्रकाश और अंधकार का; प्रेम और घृणा का। यह द्वंद्व अनेक सतहों पर प्रकट होता है। यह द्वंद्वमनुष्य के कण-कण में छिपा है। राम और रावण प्रतिपल संघर्ष में रत हैं। प्रत्येक व्यक्ति कुरुक्षेत्र में ही खड़ा है। महाभारत कभी हुआ और समाप्त हो गया, ऐसा नहीं, जारी है। हर नए बच्चे के साथ फिर पैदा होता है।

इसलिए कुरुक्षेत्र को गीता में धर्मक्षेत्र कहा है, क्योंकि वहां निर्णय होना है धर्म और अधर्म का। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निर्णय होना है धर्म और अधर्म का। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निर्णायक घटना घटने को है। इसीलिए तो इतनी चिंता है। इसीलिए तो आदमी बेचैन है। इसलिए आदमी को कहीं राहत नहीं। कुछ भी करे, राहत नहीं। क्योंकि भीतर कुछ उबल रहा है। भीतर सेनाएं बंटी खड़ी हैं। क्या होगा परिणाम, क्या होगी निष्पत्ति, इससे चिंता होती है।

और चिंता के बड़े कारण हैं। क्योंकि घृणा के पक्ष में बड़ी फौजें हैं। घृणा के पक्ष में बड़ी शक्तियां हैं। महाभारत में भी कृष्ण की सारी फौजें कौरवों के साथ थीं। केवल कृष्ण, निहत्थे कृष्ण पांडवों के साथ थे। वह बात बड़ी सूचक है। ऐसी ही हालत है। संसार की सारी शक्तियां अंधेरे के पक्ष में हैं। संसार की शक्तियां यानी परमात्मा की फौजें। परमात्मा भर तुम्हारे पक्ष में है, निहत्था। भरोसा नहीं आता कि जीत अपनी हो सकेगी। विश्वास नहीं बैठता कि निहत्थे परमात्मा के साथ विजय हो सकेगी।

कृष्ण ही अर्जुन के सारथी थे, ऐसा नहीं, तुम्हारे रथ पर भी जो सारथी बनकर बैठा है, वह कृष्ण ही हैं। प्रत्येक के भीतर परमात्मा ही रथ को सम्हाल रहा है। लेकिन सामने

विरोध में दिखायी पड़ती हैं बड़ी सेनाएं, बड़ा विराट आयोजन। अर्जुन घबड़ा गया था। हाथ-पैर थरथरा गए थे। गांडीव छूट गया था। पसीना-पसीना हो गया था। अगर तुम भी जीवन के युद्ध में पसीना-पसीना हो जाते हो, तो आश्चर्य नहीं। हार निश्चित मालूम पड़ती है, जीत असंभव आशा।

इस द्वंद्वमें ठीक-ठीक पहचान लेना जरूरी है--कौन तुम्हारा मित्र है और कौन तुम्हारा शत्रु है। यही महाभारत की प्रथम घड़ी में अर्जुन ने कृष्ण से कहा था--मेरे रथ को युद्ध के बीच में ले चलो; ताकि मैं देख लूं कौन मेरे साथ लड़ने आया है कौन मेरे विपरीत लड़ने को खड़ा है? किससे मुझे लड़ना है? साफ-साफ समझ लूं कि कौन साथी-संगी है, कौन शत्रु है?

और युद्ध के मैदान पर जितनी आसान बात थी यह जान लेना, जीवन के मैदान पर इतनी आसान नहीं। वहां शत्रु-मित्र सम्मिलित खड़े हैं। वहां जहां प्रेम है, वहीं घृणा भी दबी हुई पड़ी है। जहां करुणा है, उसी के साथ क्रोध भी खड़ा है। सब मिश्रित है। कुरुक्षेत्र के उस युद्ध में तो चीजें साफ थीं, सेनाएं बंट गयी थीं, बीच में रेखा थी--एक तरफ अपने लोग थे, दूसरी तरफ विरोधी लोग थे, बात साफ थी किसको मारना है, किसको बचाना है। लेकिन जीवन के युद्ध में बात इतनी साफ नहीं है, ज्यादा उलझन की है। तुम जिसको प्रेम करते हो, उसी को घृणा भी करते हो। जिसको चाहते हो और सोचते हो कि जरूरत पड़े तो जान दे दूं, किसी दिन उसी की जान लेने का मन भी होने लगता है। जिस पर करुणा बरसाते हो, कभी उसी पर क्रोध भी उबल पड़ता है। सब उलझा है। धागे एक-दूसरे में गुंथ गए हैं। जन्मों-जन्मों की गुत्थियां हैं। इस बात को ठीक से समझकर आज के सूत्र समझे जा सकेंगे।

तुम्हारे भीतर अंधकार को अलग छांटना होगा, प्रकाश को अलग। वह जो उपनिषद के ऋषि ने परमात्मा से प्रार्थना की है: हे प्रभु, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल--तमसो मा ज्योतिर्गमय--उसीसे शुरुआत होती है साधना की, कि मैं ठीक-ठीक

जान लूं, कौन अपना, कौन अपना नहीं। किसकी जड़ों में पानी देना है और किसकी जड़ें उखाड़कर फेंक देनी हैं।

बहुत बार भूल हो जाती है। तुम शत्रु को पोषण देते रहते हो। मित्र को जहर दे देते हो। कई बार मित्र शत्रु जैसा मालूम पड़ता है--क्योंकि कई बार मित्र सच और कठोर बातें कह देता है; और कई बार शत्रु चालबाजी कर जाता है, मीठी खुशामद करता है और मित्र जैसा लगता है।

ठीक स्पष्ट विभाजन हो जाए, तो यात्रा का बहुत काम सुगम हो जाता है। इस तरह विभाजन करो--प्रेम परमात्मा है, यही भक्ति का सार है। तो अगर परमात्मा को खोजना है, तो जो-जो तुम्हारे भीतर प्रेमपूर्ण है, उससे मैत्री करो। और जो-जो तुम्हारे भीतर द्वेषपूर्ण है, उससे अमैत्री करो।

ख्याल रखना, मैं कह रहा हूं--अ-मैत्री। जानकर, सोचकर। अ-मैत्री का अर्थ शत्रुता मत समझ लेना। इसलिए अ-मैत्री कह रहा हूं, नहीं तो शत्रुता ही कहता। क्योंकि जिससे तुमने शत्रुता बनायी, उससे भी एक तरह की मैत्री बन जाती है, संबंध बन जाता है। शत्रुता संबंध है। उससे नाता-रिश्ता हो जाता है। उसके तुम्हारे बीच धागे जुड़ जाते हैं। इसलिए जानकर अ-मैत्री शब्द का उपयोग कर रहा हूं। अमैत्री का अर्थ इतना ही है--उसकी उपेक्षा करो। उस पर ध्यान मत दो। पड़ा रहने दो एक कोने में रहे तो, उसमें रस न लो।

रस लो प्रेम में। उंडेलो अपनी सारी जीवन-ऊर्जा प्रेम के पौधे पर। प्रेम का बिरवा ही तुम्हारी तुलसी हो। उसी पर चढ़ाओ दीप। उसी पर समर्पित करो अपना जीवन। उसी की जड़ों को पुष्ट करो। इतना सा भी ध्यान मत दो घृणा पर, द्वेष पर, क्रोध पर--देखो भी मत, क्योंकि देखने में भी ऊर्जा प्रवाहित होती है।

तुमने ख्याल किया, ध्यान ऊर्जा है। तुम जिस पर ध्यान देते हो, उसी को ऊर्जा मिलने लगती है। इसलिए तो छोटे बच्चे तुम्हारे ध्यान के लिए इतनी आकांक्षा करते हैं। तुमने कह रखा है बच्चों को कि घर में मेहमान आ रहे हैं, शोरगुल मत करना, शांत बैठना, एक कोने में बैठकर खेलते रहना। मेहमान नहीं आए थे तो बच्चे एक कोने में खेल ही रहे थे, तुमने क्या कह दिया कि मेहमान आ गए हैं, अब बच्चे कोने में नहीं खेल सकते! बीच-बीच में खड़े हो जाते हैं आकर, बताने कि मां, यह देखो कि पिता, यह देखो। क्या कारण होगा? शोरगुल मचाने लगते हैं। ध्यान चाहते हैं। तुम्हारा सारा ध्यान मेहमान पर जा रहा है। स्वभावतः बच्चों को इसमें ईर्ष्या होती है। ध्यान भोजन है।

अब तो मनोवैज्ञानिक इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि मां अगर बच्चे को दूध दे दे और ध्यान न दे--सिर्फ दूध दे दे उपेक्षा से--सुला दे, उठा दे, निपटा दे काम, जैसे नर्स निपटा देती है, तो बच्चे की आत्मा पंगु रह जाती है, सिकुड़ जाती है। ध्यान चाहिए। इसलिए जब तुम्हें कोई ध्यान देता है, तुम पर ध्यान देता है, तुम प्रफुल्लित होते हो, आनंदित होते हो। इसीलिए तो तुम लोगों के मंतव्यों का इतना विचार करते हो कि लोग मेरे संबंध में क्या सोचते हैं। और क्या कारण होगा? क्या पड़ी है तुम्हें कि लोग क्या सोचते हैं? सोचते रहें! लेकिन डर है कि कहीं ऐसा न हो कि ध्यान देना बंद कर दें। मैं राह से निकलूं और कोई

जयरामजी भी न करे! तो मर जाऊंगा। तो भूखा रह जाऊंगा। कहीं किसी तल पर कोई कमी रह जाएगी। राह से निकलूं तो कम से कम लोग जयरामजी करें; लोग पहचानें कि मैं कौन हूं, कितनी पीड़ा होती है तुम्हें जब तुम्हें कोई भी नहीं पहचानता कि तुम कौन हो! तब कितना तुम बता देना चाहते हो, बैंडबाजा बजाकर कि मुझे पहचानो कि मैं कौन हूं--कि मैं भी यहां हूं।

उपेक्षा बड़ा कष्ट देती है। तुम चकित होओगे--यद्यपि चकित होना नहीं चाहिए--अगर जीवन का निरीक्षण करोगे तो तुम उस आदमी को माफ कर सकते हो जिसने तुम्हें घृणा की, लेकिन उस आदमी को माफ नहीं कर सकते जिसने तुम्हारी उपेक्षा की। दुश्मन माफ किया जा सकता है, क्योंकि दुश्मन ने चाहे घृणा भला की हो लेकिन ध्यान तो दिया ही, तुम्हारा चिंतन तो किया ही, तुम्हारे बाबत विचार की तरंगें तो उठीं ही। लेकिन उपेक्षा! तुम गुजरे और किसीने इस तरह देखा जैसे कोई गुजरा ही नहीं, तुम कभी माफ न कर पाओगे।

ध्यान भोजन है। ध्यान से चीजें परिपुष्ट होती हैं। इसलिए मैं कह रहा हूं--शत्रुता नहीं, अ-मैत्री। सिर्फ मित्रता तोड़ लो, बस इतना काफी है। मित्रता तोड़कर शत्रुता न बना लेना, नहीं तो यह फिर नए ढंग से मित्रता हो गयी--शीर्षासन करती हुई मित्रता--मगर यह मित्रता ही है।

और अक्सर ऐसा हो जाता है कि तुम शत्रु के संबंध में ज्यादा सोचते हो--मित्र के संबंध में कौन सोचता है! मित्र तो मित्र है ही, सोचना क्या है? शत्रु के संबंध में सोचते हो।

-अथातो भक्ति जिज्ञासा-3

Osho the Movie

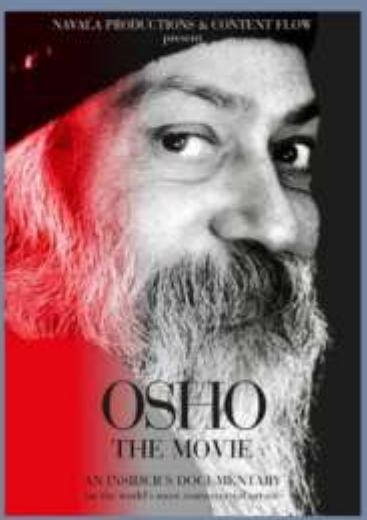

by Italian filmaker
Lakshen Sucameli

किससे करें मैत्री? किससे नहीं?

–ओशो

प्रेम से मैत्री, द्वेष से अ–मैत्री। सारी ऊर्जा को प्रेम के बिरवे पर डाल दो। बढ़ने दो उसे, खिलने दो उसे, फूल आने दो। वही बिरवा भक्ति का प्रारंभ है। उसमें ही तुमने पूरी जीवन ऊर्जा डाली, तो एक दिन भक्ति बनेगी। और जहां भक्ति है, वहां भगवान है।

सत्य की खोज में निकले व्यक्ति को अक्सर द्वेष पकड़ लेता है। तुमने अक्सर लोग देखे होंगे––तुम देख सकते हो मंदिरों में, गुफाओं में, आश्रमों में बैठे हुए––उनके जीवन का मूल आधार परमात्मा का प्रेम नहीं है, संसार की घृणा है। परमात्मा को पाने के लिए ऐसी आतुरता नहीं है, जितनी आतुरता संसार छोड़ने की है। गलती हो गयी। शुरू से ही गलत कदम उठ गया, गलत दिशा में उठ गया। प्रभु को पाने से संसार छूट जाता है। संसार छोड़ना भी नहीं पड़ता, बीच बाजार में खड़े–खड़े छूट जाता है। आदमी कमलवत हो जाता है। जल में होता है और जल छूता नहीं। वह और बात।

लेकिन एक आदमी इसी चिंता में पड़ा रहता है कि धन से कैसे छुटकारा हो, पद से कैसे छुटकारा हो, पत्नी–बच्चों से कैसे छुटकारा हो, माया–मोह से कैसे हटूं, इस आदमी ने अनजाने द्वेष का ही पोषण किया। यह संसार का द्वेष है। हालांकि यह कहेगा कि मैं परमात्मा का खोजी हूं, लेकिन इसकी जीवन गति की आधार शिलाद्वेष पर रखी है। यह संसार का द्वेषी है। संसार के द्वेष को ही यह परमात्मा का प्रेम कह रहा है; यह बात गलत है, यह बात सच नहीं है।

ऐसा समझो कि तुम एक कमरे में बैठे हो, उस कमरे से तुम्हें द्वेष है; तुम उस कमरे से मुक्त होना चाहते हो, तुम ऊब गए हो, तुम परेशान हो गए हो; तुमने बड़ा विषाद झेला उस कमरे में, बड़े उदास क्षण देखे, बड़े नर्क अनुभव किए; उस कमरे ने तुम्हें सिवाय दुःस्वप्नों के कुछ नहीं दिया है, वहां की एक–एक चीज रत्ती–रत्ती तुम्हारे अतीत की दुर्घटनाओं की स्मृति से भरी है; जिस तरफ आंख उठाते हो, वहीं पीड़ा छूती है; जो चीज छूते हो, उसीके साथ कुछ पुरानी ग्रंथियां बंधी हैं; वहां का सब विषाक्त हो गया है; तुम उस कमरे के प्रति घृणा से भरे हो, तुम कहते हो मुझे बाहर जाना है; लेकिन तुम्हें बाहर जो धूप है उससे कोई प्रेम नहीं; और बाहर जो फूल खिले हैं सतरंगे उनमें तुम्हें कुछ रस नहीं है; और बाहर वृक्षों पर जो पक्षियों ने गीत गाए, उनसे तुम्हें कुछ लेना–देना नहीं है; न

तुम्हारे जीवन में धूप के काव्य का कोई अर्थ है, और न फूलों का, और न पक्षियों का, तुम इस घर से मुक्त होना चाहते हो, क्या इसको तुम धूप का प्रेम कहोगे? खुले आकाश का प्रेम कहोगे?हरे वृक्षों का लगाव कहोगे? इसको सौंदर्य की कोई अनुभूति कहोगे?यह आदमी अगर किसी क्षण, किसी तरह--जो कि बहुत असंभव है--इस कमरे से छूट जाए--असंभव इसलिए कहता हूं कि जिसका इतना घृणा का संबंध जुड़ा है इस कमरे से, वह छूट न पाएगा। घृणा जंजीर है बुरी तरह बांधती है, छूट न पाएगा। जो कमरे से इतना डरा है, वह छूट कैसे पाएगा! भयभीत कभी नहीं छूट पाता।

और समझ लो, संयोगवशात, छूट जाए, निकल भागे, तो भी यह कमरा इसका पीछा करेगा। यह जहां बैठेगा, आंख बंद करेगा, कमरे की ही याद आएगी। क्योंकि उस कमरे के साथ इतना न्यस्त-भाव जुड़ गया है। यह तो कमरे से निकल जा सकता है लेकिन कमरा इससे नहीं निकलेगा। जहां बैठेगा, किसी और कमरे में बैठेगा, उसकी दीवाल भी इसी कमरे की दिवाल की याद दिलाएगी। न तो इसे धूप दिखायी पड़ेगी, न धूप में उड़ते हुए बादल दिखायी पड़ेंगे। यह उनके लिए आया ही नहीं है। इसकी आने की प्रेरणा ही गलत है।

फिर एक दूसरा आदमी है, जिसको इस कमरे से न कुछ विरोध है, न कोई लगाव है, उपेक्षा है। लगाव हो, तब तो छोड़ ही नहीं सकता इस कमरे को। द्वेष हो, तब भी नहीं छोड़ सकता, क्योंकि द्वेष भी लगाव ही है--विकृत हो गया लगाव, फट गया लगाव। जैसे दूध फट जाता है। है तो दूध ही, लेकिन स्वाद खट्टा हो गया, पीने योग्य न रहा। है तो दूध ही, फट गया। लगाव फट जाता है तो उसे हम द्वेष कहते हैं।

जिस आदमी का न तो लगाव है इस कमरे से, न द्वेष है इस कमरे से, अ-लगाव है, अ-मैत्री है--रहे तो कोई हर्जा नहीं, इसी कमरे में सोया रहे तो कोई हर्जा नहीं, इस कमरे का विचार नहीं उठता, चला जाए तो कोई खास...इस कमरे से चले जाने में ही कोई मोक्ष नहीं मिल जाने वाला है।

यह आदमी धूप के प्रेम से भरा है। यह फूलों की गंध इसे पुकार रही है, इसे खुला आकाश निमंत्रण दे रहा है। इसकी प्रीति है खुले से, स्वतंत्र से, मुक्त से, जहां बाधा नहीं दीवालों की, जहां असीम है। यह विराट में उत्सुक है।

यह दोनों आदमी इस कमरे से बाहर निकलेंगे, और अगर तुम इन दोनों को निकलते देखो तो तुम्हें कुछ भेद दिखायी न पड़ेगा। लेकिन बड़ा भेद है, महा भेद है। पहला, कमरे से निकल रहा है, लेकिन कमरा उसके भीतर रहेगा। दूसरा, कमरे में कभी था ही नहीं--अ-मैत्री थी। शत्रुता भी नहीं थी, मित्रता भी नहीं थी। मित्रता-शत्रुता दोनों का अभाव था। विरक्ति थी, वैराग्य था। यह आदमी निकल रहा है। यह दोनों आकर धूप में खड़े हो जाएंगे, पहला आदमी जो कमरे से द्वेष के

कारण निकल आया है, अब भी कमरे की ही याद से भरा होगा, उसकी आंखों पर एक पर्दा पड़ा होगा, धूप उसे दिखायी न पड़ेगी। उसकी आंखों में अभी भी अंधेरा होगा। कमरा उसे घेरे है। कमरा एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है। यह जो आदमी कमरे के प्रति कोई लगाव नहीं रखता, विरोध भी नहीं रखता, इसकी आंखें खुली हैं, कोई पर्दा नहीं; इसे सूरज मोह लेगा, यह नाचेगा धूप में। यह आनंदमग्न होगा। इसके जीवन में रसधार बहेगी।

तो पहली बात साफ–साफ समझ लेना जरूरी है कि जो भी तुम्हारे भीतर प्रेम का तत्व है, वही परमात्मा की पहली किरण है। तुम्हारे भीतर जो भी द्वेष का तत्व है, वही बाधा है। द्वेष से अ–मैत्री साधो, प्रेम से मैत्री साधो।

द्वेष का अर्थ होता है––घृणा, क्रोध नकारात्मक वृत्तियां। विरोध, निषेध, नकार, विध्वंस, विनाश। द्वेष मिटाना चाहता है। और मिटाने वाली किसी भी प्रवृत्ति से बहुत ज्यादा आंदोलित हो जाना खतरनाक है। क्योंकि जब तुम मिटाते हो, तो तुम भी मिटते हो। बिना मिटे मिटा नहीं सकते हो। जो हत्या करता है, वह आत्महत्या भी कर रहा है। जो दूसरे को दुख पहुंचाता है, वह अपने दुख के बीज बो रहा है। जो दूसरों को नरक में ढकेल रहा है, वह स्वयं भी नरक की सीढ़ियां उतर रहा है। उसे पता हो, पता न हो यह और बात। लेकिन दुनिया में विध्वंस करके कोई सृजन को उपलब्ध नहीं होता। मिटाने वाला खुद मिट जाता है। जो दूसरों के लिए गड्ढे खोदता है, एक दिन अचानक पाता है उन्हीं गड्ढों में खुद गिर गया है।

सृजन सृजनात्मक है। दोहरे अर्थों में। जब तुम एक गीत रचते हो, तो एक तरफ तो गीत रचा जाता है, दूसरी तरफ गीतकार रचा जाता है। गीत के रचने में ही तो गीतकार का जन्म है। जब एक मां से एक बच्चा पैदा होता है, तो तुम यह सोचते हो––बच्चा पैदा हुआ, बस इतना ही सोचते हो? मां पैदा हुई, ऐसा नहीं सोचते? तो तुम भूल गए। तुमने बात पूरी नहीं देखी। यह बच्चा पैदा होना एक पहलू है, दूसरी तरफ यह स्त्री कल तक मां नहीं थी, आज से मां है, यह दूसरा पहलू है। और ध्यान रखना, एक स्त्री में और एक मां में बड़ा फर्क है। स्त्री स्त्री है, सिर्फ संभावना है बीज है। बीज और वृक्ष में फर्क करोगे या नहीं करोगे? ऐसे ही स्त्री और मां का फर्क है।

मां है––स्त्री में फूल आ गए, फल आ गए। स्त्री फलवती हुई। जब तक स्त्री मां नहीं है, तब तक कुछ खाली–खाली होता है। तब तक कुछ भराव हुआ नहीं। तब तक पात्र रिक्त है। उसका गर्भ रिक्त है, तो पात्र रिक्त है। जब स्त्री गर्भवती होती है तो उसमें एक अनूठा सौंदर्य और प्रसाद झलकने लगता है। गर्भवती स्त्री को चलते देखा? गर्भवती स्त्री के चेहरे पर गरिमा देखी? गर्भवती स्त्री के चेहरे से झलकती आभा देखी? वही आभा, जो वृक्ष फलवान होकर प्रकट करता है। ऐसे ही कोई जब गीत लिखता है, एक तरफ गीत रचा जाता है, दूसरी तरफ गीतकार रचा जाता है। जब कोई मूर्ति रचता है, इधर मूर्ति बनती है, उधर मूर्तिकार बनता है। जब कोई वीणा पर संगीत को जन्म देता है, इधर संगीत का जन्म होता है, उधर वीणावादक का जन्म होता है।

सृजन दोहरा है, जैसा विध्वंस दोहरा है। प्रेम सृजनात्मक ऊर्जा है। द्वेष विध्वंसक ऊर्जा है। द्वेष की प्रतीक प्रतिमाएं, जैसे अडोल्फ हिटलर। प्रेम की प्रतीक प्रतिमाएं जैसे कृष्ण, जैसे बुद्ध, जिनके जीवन में करुणा और प्रेम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं; वे अपने परम फल को उपलब्ध हो गए हैं। उन्होंने परम संपदा पा ली।

हिटलर का जीवन रिक्त है। हिटलर एक खंडहर है। मिटाने में कोई और हो भी नहीं सकता, खंडहर ही होगा। कुछ और हो भी नहीं सकता।

–अथातो भक्ति जिज्ञासा–3

राग और द्वेष

–ओशो

रो याल रखो, द्वेष सूत्र है तुम्हारे भीतर नकारात्मकता का। नरक का द्वार है द्वेष। फिर तुम किससे द्वेष करते हो, इससे बहुत फर्क नहीं पड़ता। तुम संसार से द्वेष करो तो भी वह द्वेष है। और जो संसार से द्वेष करता है, वह परमात्मा को कभी पा न सकेगा, क्योंकि परमात्मा परम विधायकता का नाम है। नकार से तुम कैसे विधायक पर पहुंचोगे? नहीं कहकर तुम कैसे हां को पाओगे? यह असंभव है। नहीं की ईंटों को रखते–रखते तुम हां का मंदिर न बना पाओगे। न की ईंटों को रख–रखकर तुम नरक ही निर्मित करोगे।

इसलिए द्वेष से आंदोलित मत होना। आंदोलित प्रेम से होना। और फिर मैं तुमसे कह दूं––संसार के प्रेम में पड़ा हुआ आदमी भी बेहतर है उस आदमी से जो संसार के द्वेष में पड़ गया है। माना कि संसार का प्रेम क्षुद्र का प्रेम है, क्षणभंगुर का प्रेम है, बहुत दुख लगाएगा, लेकिन कम से कम प्रेम तो है। क्षणभंगुर ही सही, लेकिन विधायक तो है। और जो आदमी संसार के द्वेष में पड़ गया है, यह आदमी और भी उपद्रव में पड़ गया है। द्वेष इसे घेर लेगा। धीरे–धीरे द्वेष का अंधकार इसे पकड़ लेगा। यह कितनी ही प्रार्थनाएं करे और पूजाएं करे, इसकी सब प्रार्थनाएं व्यर्थ हैं, और इसकी सब पूजाएं व्यर्थ है। क्योंकी द्वेष से प्रार्थना उठती ही नहीं। द्वेष में प्रार्थना का अंकुर आता ही नहीं।

भक्त कहता है––संसार से द्वेष नहीं, परमात्मा से राग। यह भक्ति की आधारशिला है। तथाकथित ज्ञानी और तपस्वी कहता है––संसार से द्वेष। फर्क दोनों की भाषा का है। ज्ञानी और तपस्वी कहता है––विराग, संसार से विराग; भक्त कहता है––प्रभु से राग। भक्त विधायक है।

भक्ति ने मनुष्य के मनोविज्ञान को बहुत गहराई से पकड़ा है। द्वेष करने वाले बहुत मिल जाएंगे, क्योंकि द्वेष सस्ता है। भगोड़े बहुत मिल जाएंगे, संसार को घृणा करने वाले बहुत मिल जाएंगे, क्योंकि घृणा ही करना लोग जानते हैं। लेकिन संसार की घृणा से परमात्मा के प्रेम की सुगंध नहीं उठी कभी, नहीं उठेगी कभी। संसार के प्रति तुम्हारा जो प्रेम है, उस प्रेम को परमात्मा की तरफ मोड़ो जरूर, मगर संसार के प्रति घृणा का संबंध मत बना लेना, नहीं तो चूक गए––चले भी और चले भी नहीं।

एक पैर उठाया और दूसरे पैर में जंजीर बांध ली।

दूसरा शब्द राग समझ लेना चाहिए, फिर सूत्र में उतरना आसान हो जाएगा। राग का अर्थ होता है--प्रीति। शुद्ध प्रीति। प्रेम। राग शब्द बड़ा अनूठा है। चाहत, अभीप्सा। राग का अर्थ होता है--जिसके बिना रहने में कोई अर्थ नहीं। जिसके साथ मरना भी हो जाए, तो भी सार्थकता है। और जिसके बिना जीना पड़े, तो जीना भी व्यर्थ है। जिसके बिना तुम अपने जीवन को व्यर्थ पाते हो, अर्थहीन पाते हो, उससे तुम्हारा राग है।

किसी का धन से राग है, वह सोचता है--धन के बिना सब व्यर्थ है। हालांकि उसका राग गलत विषय से लगा है। क्योंकि जिस दिन धन कमा लेगा, उस दिन पाएगा कि कुछ कमाया नहीं, जीवन गंवाया। धन तो हाथ आ गया, निर्धनता नहीं मिटी।

धन के तो ढेर लग गए और भीतर निर्धनता के गड्ढे और बड़े हो गए।

किसी का पद से राग है। तो सोचता है जब तक प्रधानमंत्री न हो जाऊं, कि राष्ट्रपति न हो जाऊं, तब तक, तब तक जीवन असार है; प्रधानमंत्री होकर ही मरना है। प्रधानमंत्री होकर पता चलेगा कि जीवन व्यर्थ गया। बड़ी कुर्सी पर बैठकर तुम बड़े न हो जाओगे। सच तो यह है कि जितनी बड़ी कुर्सी हो, उतने ही तुम्हारे छोटेपन को प्रकट करेगी। बड़ी कुर्सी पृष्ठभूमि बन जाएगी। बड़ी लकीर बन जाएगी। उसके सामने तुम छोटी लकीर हो जाओगे।

इसलिए पद पर पहुंचकर लोग जितने छोटे सिद्ध होते हैं, उतने और किसी तरह से सिद्ध नहीं होते। जहां शक्ति होती है, वहां पता चलता है। शक्ति निश्चित रूप से लोगों के भीतर जो भी भ्रष्ट था उसे प्रकट करने का कारण बन जाती है। क्योंकि मौका मिल गया। इच्छाएं तो सदा से थीं, लेकिन पूरा करने की सुविधा नहीं थी। सुविधा नहीं थी, तो दुनिया को हम यही दिखाते थे कि इच्छाएं ही नहीं हैं। क्योंकि सुविधा नहीं है, यह कहने में तो पीड़ा होती है। इच्छाएं ही नहीं हैं। जब सुविधा मिलती है, तब असलियत प्रकट होती है, सब इच्छाएं दबी पड़ी थीं, प्रकट होने लगती हैं। जैसे वर्षा आ गयी, और सब बीज जो जमीन में पड़े थे, अंकुरित हो गए। सब तरफ घास-पात ऊगने लगा। ऐसे ही जब शक्ति की वर्षा होती है, तो तुम्हारे भीतर सारी इच्छाएं, दमित इच्छाओं का अंकुरण शुरू हो जाता है। तब आदमी बड़ा क्षुद्र मालूम होता है। और बड़े से बड़े पद पर पहुंचकर भी यह पक्का पता चल जाता है--पक्का पता तभी चलता है--कि हाथ तो कुछ लगा नहीं! और जिंदगी पूरी गंवा बैठे! जिंदगी हाथ से निकल गयी और यह कचरा कमाया! इसका कोई मूल्य नहीं है।

लेकिन राग का अर्थ है--जिससे जीवन में अर्थ आएगा; उस संबंध का नाम राग है। गलत राग होते हैं सही, राग होते हैं। द्वेष सदा गलत होता है, राग सही भी होते हैं, गलत भी होते हैं। धन से राग है तो गलत है। ध्यान से जुड़ जाए तो सही है। पद से राग है तो गलत है, प्रभु से जुड़ जाए तो सही है। मैं इसे फिर दोहरा दूं--द्वेष सदा गलत होते हैं, क्योंकि द्वेष ही गलत है; राग सदा सही नहीं होते, और न सदा गलत होते हैं। इसलिए मैंने तुमसे कहा कि राग के बहुत रूप हैं। स्नेह--अपने से छोटे के प्रति हो; समान के प्रति हो तो प्रेम; अपने से बड़े के प्रति हो तो श्रद्धा; और सब सीमाओं से मुक्त हो जाए, किसी विशेष के प्रति न हो, इस समस्त अस्तित्व के प्रति हो, तो भक्ति।

राग प्यारा शब्द है, इसके बहुत अर्थ होते हैं। एक अर्थ रंग भी होता है। जहां राग है, वहां रंग भी है। इसलिए तो राग-रंग शब्द है। रंग यानी उत्सव। जहां राग है, वहां फूल भी खिलेंगे। जहां राग है, वहां इंद्रधनुष भी उठेंगे। जहां राग है, वहां गीत भी होगा, गान भी होगा नृत्य भी होगा। जहां राग है, वहां मरुस्थल नहीं होंगे, मरूद्यान होंगे। जहां राग है, वहां हरियाली होगी।

इसलिए भक्त के जीवन में हरियाली होती है, ज्ञानी के जीवन में रूखा-सूखापन होता है। ज्ञानी का जीवन मरुस्थल जैसा होता है। कहीं कोई हरियाली नहीं, कोई फूल नहीं, कोई सरिता नहीं, कोई झील नहीं। भटक जाओ तो जल के कण को तड़फ जाओ। सब सूखा-सूखा। ज्ञानी के जीवन में काव्य नहीं होता। रंग ही नहीं उठते। ज्ञान बेरौनक है। बे-रंग-भक्ति में बड़े रंग उठते हैं, बड़ी तरंगें उठती हैं। इसीलिए तो मीरा के शब्दों में जो रस है, वह कुंदकुंद के शब्दों में नहीं हो सकता। और कुंदकुंद भी पहुंच गए। लेकिन पहुंचे हैं मरुस्थल से। उन्हें फूलों का पता ही नहीं--फूल उनके मार्ग में आए ही नहीं।

-अथातो भक्ति जिज्ञासा-3

मैत्री भाव का विकास कैसे?

–ओशो

मैत्री का और प्रेम का हमारे भीतर जो बिंदु है, उसे विकसित करना होगा, सारी प्रकृति के खिलाफ विकसित करना होगा, क्योंकि प्रकृति उसे विकसित होने का मौका नहीं देती है। जो आप जीवन पाते हैं, वह उसे मौका नहीं देता। उसमें केवल शत्रुता विकसित होती है। और जिसको हम मैत्री कहते हैं, वह मैत्री केवल औपचारिकता होती है और शिष्टाचार होती है। वह मैत्री केवल एक व्यवस्था होती है शत्रुता से बचने की, शत्रुता को पैदा न कर लेने की। लेकिन वह मैत्री नहीं होती। मैत्री बड़ी अलग बात है।

उस बिंदु को कैसे विकसित करें? कैसे हमारे भीतर मैत्री का भाव पैदा होना शुरू हो? उसका भाव करना होगा। मैत्री का सतत भाव करना होगा। जो भी हमारे चारों तरफ लोग हैं, उनके प्रति मैत्री का संदेश भेजना होगा, मैत्री की किरणें भेजनी होंगी। और अपने भीतर उस मैत्री के बिंदु को निरंतर सचेष्ट करना होगा और सक्रिय करना होगा।

जब आप नदी के किनारे बैठे हों, तो नदी की तरफ प्रेम भेजिए। इसलिए नदी का नाम ले रहा हूं कि किसी आदमी की तरफ प्रेम भेजने में थोड़ी दिक्कत हो सकती है। एक दरख्त के प्रति प्रेम भेजिए। इसलिए दरख्त की बात कह रहा हूं कि एक आदमी की तरफ भेजने में थोड़ी कठिनाई हो सकती है। सबसे पहले प्रकृति की तरफ प्रेम भेजिए। प्रेम का बिंदु सबसे पहले प्रकृति की तरफ विकसित हो सकता है। क्यों? क्योंकि प्रकृति आप पर कोई चोट नहीं कर रही है।

पुराने दिनों में, अदभुत लोग थे, सारे जगत के प्रति प्रेम का संदेश भेजते थे। सुबह सूरज ऊगता था, तो हाथ जोड़कर उसे नमस्कार कर लेते थे। और उसे कहते कि 'धन्य हो। और तुम्हारी करुणा अपार है कि तुम हमें प्रकाश देते और तुम हमें रोशनी देते।'

यह पूजा कोई पैगेनिज्म नहीं था, यह पूजा कोई नासमझी नहीं थी। इसमें अर्थ थे, इसमें बड़े अर्थ थे। जो व्यक्ति सूरज के प्रति प्रेम से भर जाता था, जो व्यक्ति नदी को मां कहकर प्रेम से भर जाता था, जो जमीन को माता कहकर उसके स्मरण से प्रेम से भर जाता था, यह असंभव था कि वह आदमियों के प्रति अप्रेम से भरा हुआ ज्यादा दिन रह जाए। यह असंभव है। अदभुत लोग थे,

उन्होंने सारी प्रकृति की तरफ प्रेम के संदेश भेजे थे। और सब तरफ पूजा और प्रेम और भक्ति को विकसित किया था।

जरूरत है इसकी। अगर प्रेम का अंकुर भीतर पैदा करना है, तो सबसे पहले उसका संदेश प्रकृति की तरफ भेजना होगा। हम तो ऐसे अजीब लोग हैं कि रात पूरा चांद भी ऊपर खड़ा रहेगा और हम नीचे बैठकर ताश खेलते रहेंगे और रमी खेलते रहेंगे। और हम हिसाब-किताब लगाते रहेंगे कि एक रुपया हार गए हैं या एक रुपया जीत गए हैं! और चांद ऊपर खड़ा रहेगा और प्रेम का एक इतना अदभुत अवसर व्यर्थ खो जाएगा।

चांद आपके उस केंद्र को जगा सकता था। अगर चांद के पास दो क्षण मंत्रमुग्ध बैठकर आपने प्रेम का संदेश भेजा होता, तो उसकी किरणों ने आपके भीतर कोई बिंदु सक्रिय कर दिया होता, कोई तत्व, और आप प्रेम से भर गए होते।

चारों तरफ मौके हैं। चारों तरफ मौके हैं, यह पूरी प्रकृति बहुत अदभुत चीजों से भरी हुई है। उनकी तरफ प्रेम करिए। और प्रेम का कोई भी मौका आ जाए, उसे खाली मत जाने दीजिए, उसका उपयोग कर लीजिए। उसका उपयोग इसलिए कि अगर रास्ते से आप जा रहे हैं और एक पत्थर पड़ा है, तो उसे हटा दीजिए। यह बिल्कुल मुफ्त में मिला हुआ उपयोग है, जो आपके जीवन को बदल देगा। यह बिल्कुल सस्ता-सा काम है। इससे सस्ती और साधना क्या होगी कि आप रास्ते से निकले हैं और एक पत्थर पड़ा था और आपने उठाकर उसे किनारे रख दिया है। न मालूम कौन अपरिचित वहां से निकलेगा! और न मालूम कौन अपरिचित उस पत्थर से चोट खाएगा! आपने प्रेम का एक कृत्य किया है।

मैं आपको इसलिए कह रहा हूं, बड़ी छोटी-छोटी बातें जिंदगी में प्रेम के तत्व को विकसित करती हैं, बहुत छोटी-छोटी बातें। एक रास्ते पर एक बच्चा रो रहा है। आप चले जाते हैं। आप खड़े होकर दो क्षण उसके आंसू नहीं पोंछ सकते!

अब्राहिम लिंकन एक सीनेट की बैठक में अपनी जा रहा था, बीच में एक सूअर फंस गया एक नाली में। वह भागा हुआ गया और उसने कहा कि 'सीनेट को थोड़ी देर रोकना। मैं अभी आया।' यह बड़ी अजीब बात थी। अमेरिका की संसद शायद ही कभी रुकी हो इस तरह से। वह वापस लौटा, उसने सूअर को निकाला। उसके सब कपड़े मिड़ गए कीचड़ में। उसे नाली से बाहर निकालकर उसने रखा, फिर वह अंदर गया। लोगों ने पूछा, 'क्या बात थी? इतने आप घबराए हुए काम रोककर बाहर क्यों गए!' तो उसने कहा, 'एक प्राण संकट में था।'

यह प्रेम का कितना सरल-सा कृत्य था, लेकिन कितना अदभुत है। और ये छोटी-छोटी बातें...। अब मैं देखता हूं, ऐसे लोग हैं, जो इसलिए पानी छानकर पीएंगे कि कोई कीड़ा न मर जाए, लेकिन उनके मन में प्रेम नहीं है। तो उनका पानी छानना बेकार है। वह उनके लिए बिल्कुल ही मेकेनिकल हैबिट की बात है कि वे पानी छानकर पीते हैं; कि वे रात को खाना नहीं खाते, क्योंकि कोई कीड़ा न मर जाए। लेकिन उनके हृदय में प्रेम नहीं है, तो इससे कोई मतलब नहीं है।

मतलब इससे नहीं है कि पानी छानकर पीते हैं, कि रात को खाना नहीं खाते हैं; कि मांसाहार नहीं करते हैं, इससे भी मतलब नहीं है। एक ब्राह्मण या एक जैन या एक बौद्ध मांसाहार नहीं करेगा, तो यह मत समझना कि उसका मन प्रेम से भरा हुआ है। यह केवल आदत की बात है, यह केवल वंश-परंपरागत सुनी हुई बात है, समझी हुई बात है। लेकिन उसके मन में प्रेम नहीं है।

हां, अगर यह आपके प्रेम से विकसित हो, तो यह अदभुत बात हो जाएगी। अहिंसा तब परम धर्म है, जब वह प्रेम से विकसित हो। अगर वह ग्रंथों को पढ़कर और किसी संप्रदाय को मानकर विकसित हो जाए, वह कोई धर्म ही नहीं है।

तो जीवन में बड़े छोटे-छोटे काम हैं, बड़े छोटे-छोटे काम हैं। और हम भूल ही गए हैं। यानि मैं आपसे यह कहता हूं, जब आप किसी के कंधे पर हाथ रखते हैं, तो अपने सारे हृदय के प्रेम को अपने हाथ से उसके पास भेजें। अपने सारे प्राण को, अपने सारे हृदय को उस हाथ में

संकलित होने दें और जाने दें। और आप हैरान होंगे, वह हाथ जादू हो जाएगा। और जब आप किसी की आंख में झांकते हैं, तो अपनी आंखों में अपने सारे हृदय को उंडेल दें। और आप हैरान हो जाएंगे, वे आंखें जादू हो जाएंगी और वे किसी के भीतर कुछ हिला देंगी। न केवल आपका प्रेम जागेगा, बल्कि हो सकता है कि दूसरे के प्रेम जगने के भी आप उपाय और व्यवस्था कर दें। जब कोई एक ठीक से प्रेम करने वाला आदमी पैदा होता है, तो लाखों लोगों के भीतर प्रेम सक्रिय हो जाता है।

ये मैत्री और प्रेम के बिंदु को उठाने के लिए जो भी आपको मौका मिले, उसे मत खोएं। और उसके मौका मिलने के लिए एक सूत्र याद रखें। नियमित चौबीस घंटे में यह स्मरण रखें कि एक-दो काम ऐसे जरूर करें, जिनके बदले में आपको कुछ भी नहीं लेना है। चौबीस घंटे हम काम कर रहे हैं। उन कामों को हम इसलिए कर रहे हैं कि बदले में हम कुछ चाहते हैं। चौबीस घंटे में नियमपूर्वक कुछ काम ऐसे करें, जिनके बदले में आपको कुछ भी नहीं लेना है। वे काम प्रेम के होंगे और आपके भीतर प्रेम को पैदा करेंगे। अगर एक व्यक्ति दिन में एक काम भी ऐसा करे जिसके बदले में उसकी कोई आकांक्षा नहीं है, उसका उसे बहुत बड़ा बदला मिल जाएगा, क्योंकि उसके भीतर प्रेम का केंद्र सक्रिय हो जाएगा और विकसित होगा।

तो कुछ करें, जिसके बदले में आपको कुछ भी नहीं चाहिए; कुछ भी नहीं चाहिए। उससे मैत्री धीरे-धीरे विकसित होगी। एक घड़ी आएगी कि आप केवल उनके प्रति मैत्रीपूर्ण हो पाएंगे, जो आपके प्रति शत्रुतापूर्ण नहीं हैं। फिर और विकास होगा और एक घड़ी आएगी, आप उनके प्रति भी मैत्रीपूर्ण हो सकेंगे, जो आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। और एक घड़ी आएगी, कि आपको समझ में नहीं आएगा कि कौन मित्र है और कौन शत्रु है।

महावीर ने कहा है, 'मिति मे सब्ब भुएषु वैरं मज्झ न केवई। सब मेरे मित्र हैं और किसी से मेरा वैर नहीं है।'

यह कोई विचार नहीं है, यह भाव है। यानि यह कोई सोच-विचार नहीं है, यह भाव की स्थिति है कि कोई मेरा शत्रु नहीं है। और कोई मेरा शत्रु नहीं, यह कब होता है?जब मैं किसी का शत्रु नहीं रह जाता हूं। यह तो हो सकता है कि महावीर के कुछ शत्रु रहे हों, लेकिन महावीर कहते हैं, कोई मेरा शत्रु नहीं है। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है, मैं किसी का शत्रु नहीं। और महावीर कहते हैं, मेरा वैर किसी के प्रति नहीं है। कितने आनंद की घटना नहीं घटी होगी!

आप एक व्यक्ति को प्रेम कर लेते हैं, कितना आनंद उपलब्ध होता है। और जिस व्यक्ति को सारे जगत को प्रेम करने की संभावना खुल जाती होगी, उसके आनंद का कोई ठिकाना है! यह सौदा महंगा नहीं है। आप खोते कुछ नहीं हैं और पा बहुत लेते हैं।

इसलिए मैं महावीर को, बुद्ध को त्यागी नहीं कहता हूं। इस जगत में सबसे बड़ा भोग उन्हीं लोगों ने किया है। इस जगत में सबसे बड़ा भोग उन्हीं लोगों ने किया है। त्यागी आप हो सकते हैं, वे नहीं। आनंद के इतने अपरिसीम अनंत द्वार उन्होंने खोले। इस जगत में जो भी श्रेष्ठतम था, जो भी सुंदर था, जो भी शुभ था, सबको उन्होंने पीया और जाना। और आप क्या जान रहे हैं? सिवाय जहर के आप कुछ भी नहीं जान रहे हैं। और उन्होंने अमृत को जाना।

तो मैं आपको यह कहूं कि प्रेम की वह अंतिम चरम घड़ी, जब हम सारे जगत के प्रति प्रेम को विस्तीर्ण कर पाते हैं और हमारे हृदय से किरणें बहती रहती हैं, उसके लिए जीवन को साधना होगा। कोई कृत्य प्रेम का रोज जरूर करें, सचेत करें। और सारे दिन हजार मौके हैं, जब आप प्रेम जाहिर कर सकते हैं। लेकिन आदतें हमारी खराब हैं। प्रेम जाहिर करने के सारे मौके हम खो देते हैं और घृणा जाहिर करने का एक भी मौका नहीं खोते! घृणा जाहिर करने के जितने मौके खो सकें, उतना शुभ है। और प्रेम जाहिर करने के जितने मौके पकड़ सकें, उतना शुभ है। घृणा के मौके को खाली जाने दें। एकाध मौके को सचेत होकर खाली जाने दें और प्रेम के एकाध मौके को सचेत होकर पकड़ें। इससे साधना में अदभुत गति आएगी।

-ध्यान सूत्र-5

पति-पत्नी के बीच मैत्री साधो

–ओशो

पत्नी के साथ थोड़ी मैत्री बनाओ! लेकिन में नहीं देखता किसी पति की अपनी पत्नी से मैत्री हो। कि वह अपने हृदय की बातें उससे कहता हो। पति–पत्नी बातें करते ही नहीं। असल में पति बात ही करने में डरता है कि कहीं बात में कोई और बात न निकल आए। पत्नी को देखा कि एकदम अखबार पढ़ने लगता है––वही अखबार जो तीन दफे दिन भर में पढ़ चुका है, फिर पढ़ने लगता है। जल्दी से रेडियो खोल लेता है। या बातें भी करता है तो इधर–उधर की करता है, जिसमें पत्नी को कोई रस नहीं। जिसमें उनको भी कुछ रस नहीं, सिर्फ समय काटने के लिए बातें करता है। सिर्फ ऐसी बातें करता है जिनमें कोई झगड़े का उपाय न हो। और वही–वही बातें फिर रोज करता है। पत्नी भी ऊब जाती है उसकी बकवास सुन–सुन कर।

मैत्री साधो! प्रेम तो दूर की बात है, कम से कम मैत्री तो साधो! और मैत्री सधे तो शायद कभी प्रेम भी सध जाए।

कभी पत्नी के साथ बैठ कर ताश खेलते हो? कभी पत्नी के साथ बैठ कर शतरंज खेलते हो? कभी चौपड़ बिछाते हो? कभी पत्नी के साथ बैठ कर गपशप करते हो? कोई संबंध नहीं तुम्हारा मैत्री का। पति और पत्नी के बीच मैत्री असंभव मालूम होती है। तो फिर दुश्मनी ही बच रहती है। फिर क्या? एक ही नाता बच रहा फिर और वह दुश्मनी का।

–दीपक बारा नाम का–9 प्रश्न–2

श्वास को शिथिल करो

–ओशो

जब भी आपको समय मिले, कुछ देर के लिए श्वास-प्रक्रिया को शिथिल कर दें। और कुछ नहीं करना है--पूरे शरीर को शिथिल करने की कोई जरूरत नहीं है। रेलगाड़ी में, हवाई जहाज में या कार में बैठे हैं, किसी और को मालूम भी नहीं पड़ेगा कि आप कुछ कर रहे हैं। बस श्वास-प्रक्रिया को शिथिल कर दें। जैसे वह सहज चलती है, वैसे चलने दें। फिर आंखें बंद कर लें और श्वास को देखते रहें--भीतर गई, बाहर आई, भीतर गई।

एकाग्रता न करें। यदि आप एकाग्रता करेंगे तो मुश्किल में पड़ जाएंगे, क्योंकि तब सब कुछ बाधा बन जाएगा। यदि कार में बैठे हुए आप एकाग्रता करेंगे, तो कार की आवाज बाधा बन जाएगी, पास में बैठा हुआ व्यक्ति बाधा बन जाएगा। ध्यान एकाग्रता नहीं है। ध्यान सिर्फ जागरूकता है। आप सिर्फ शिथिल रहे और श्वास को देखते रहें। उस देखने में कुछ भी बहिष्त नहीं है। कार आवाज कर रही है बिलकुल ठीक है, स्वीकार कर ले। सड़क पर ट्रैफिक है- वह भी ठीक है, जीवन का अंग है। आपके पास में बैठा व्यक्ति खराटे ले रहा है--स्वीकार कर लें। कुछ भी अस्वीत नहीं है।

Insight into Sannyas Names

-Osho

Anand means bliss and bhakta means devotion, a devotee. And that is going to be your path.

[Osho said that Bhakta should make it his very style of life to be loving, whether someone was present or not, for the emphasis should be not on the object of love, but on the feeling of love itself. Whatsoever you regard with love, with respect, becomes a person and is no longer just a thing....]

So, for a loving person the whole world becomes luminous with personality. That's what God means. There is no way to approach God directly, only through love. So slowly go on giving things a personality. And that depends on your attitude and how you approach them. You can go to the tree and touch it as if you are touching your beloved. In that moment that tree becomes your beloved, because it is you who creates your world.

So, devotion is nothing but a tremendous creativity and the whole world is by and by transfigured, transplanted into a new dimension. Everything becomes luminous with personality. Nothing is a thing... everything has a soul. You impart the soul, or it has always been there but you were blind. Love opens your eyes and you discover -- yes, that is more correct: you discover the soul.

So let it be a continuous adventure. Look at things, look at people, at the sky, but let love be flowing. Your love will create the world around you, a new world, a new being That new being is what in the old ages people used to call God. God is not somebody sitting

somewhere. Unless you impart godhood to existence, God is nowhere to be found. Unless you create Him, He is nowhere. God exists in the love of the devotee. You get me? In the love of the devotee, God exists.

So if somebody says, 'I would like to know God,' he is asking the wrong question. He should ask, 'How should I create my God ?' That is the right question. If somebody says, 'First I will have to find Him and then I can worship and pray,' worship is never going to happen to him, because in the first place you have to create God. You have to create the temple and you have to create the God who makes His abode in that temple.

Devotion is that creativity, that poetic way of looking at the world. Romance in the eyes is what devotion is. Poetry in the heart, that's what devotion is.

So let that by and by be imbibed by you. Create your God, because there is no other way to find Him. So only great creative people can find God. Others simply waste their energy and time. It is not a question of logic. Logic is a very destructive force. It is a question of love.

So from this very moment start moving in a very very loving way. If somebody comes, even if he is not good to you, still he is God, but God is not choosing to be good with you in this moment, so okay. But that doesn't make any difference. Even if somebody comes and kills you, it is God who has become the murderer. Good if He chooses that way, but don't take the godhood from the person. He may be a murderer but he remains a God. Somebody insults you, he is very antagonistic and full of hatred for you; that makes no difference... God is playing that way.

It is said about Mansoor, the great sufi mystic, that when he was killed, he laughed. He was murdered, butchered, in a crueller way than Jesus. His limbs were cut one by one: first his feet, then his hands, then his eyes, then his tongue. He was killed pan by pan and it was a tremendous agony, but when he was being killed, he laughed. He looked at the sky and laughed tremendously. an uproarious laugh. People were shocked.. .they could not believe it -- 'Has he gone mad? This is no situation in which to laugh!'

And when somebody asked from the crowd, 'Why are you laughing, Mansoor?' he said, 'I am laughing because He cannot deceive me. In whatsoever form He comes, I will recognise Him. So I am laughing at Him!' He was laughing to God saying,'You cannot deceive me. In whatsoever form you come, I will love you ! You cannot trick me. I have known you and I have known you once and for all.'

So become a devotee. This is your name -- forget the old name. Now this is going to be your birthdate from now onwards. Remember this day as your birth. The old man is gone. Say goodbye to him, because he has brought you here.

-A rose is a rose is a rose

ओशो
हाशिए पर मुखपृष्ठ

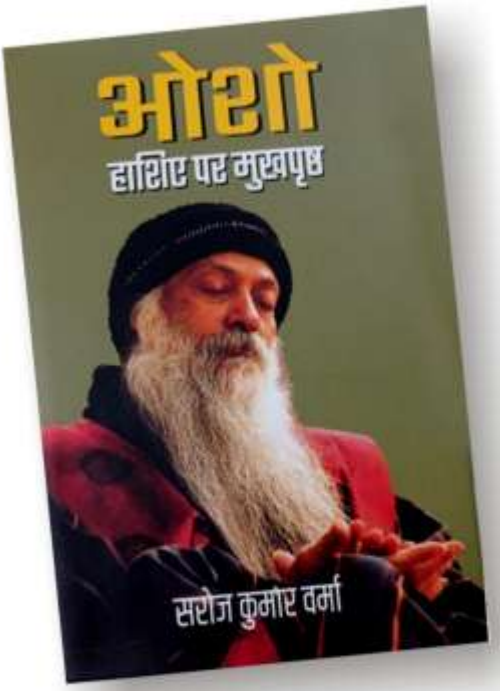

–सरोज कुमार वर्मा

ओशो दर्शन पर पहली स्तरीयऔर जरूरी किताब, जिसमें स्वतंत्र एवं तुलनात्मक दोनों ढंग से उनके विचारों की विवेचना की गयी है। इसलिए यह अनिवार्य रूप से पठनीय और संग्रहणीय है।

–मा मोक्ष संगीता, सम्पादिका

ओशो स्वातंत्र्योत्तर भारतीय दर्शन के सर्वाधिक विशिष्ट दार्शनिक हैं। उनकी विशिष्टता बहुआयामी है। एक आयाम चिंतन का है तो दूसरा आयाम भाषा का, तीसरा आयाम वक्तृत्व कला का है तो चौथा आयाम विद्रोही तेवर का। विद्रोही तेवर के कारण कितने लोग उनके विरोधी हैं तो चिंतन और भाषा के कारण कितने ही लोग उनके समर्थक हैं। लेकिन जो लोग उनके विरोधी हैं, वे भी उनकी वक्तृत्व कला और तर्क–सरणी की प्रशंसा किये बगैर नहीं रहते। अतः यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि ओशो ऐसे दार्शनिक हैं, जिन्हें हाशिए पर नहीं रखा जा सकता, नहीं रखा जाना चाहिए।

लेकिन उन्हें हाशिए पर रखा गया और अब तक रखा जा रहा है। उन्हें दर्शन में वह अपेक्षित स्थान नहीं मिला, जो मिलना चाहिए; जबकि उन्होंने दर्शन को सामग्री, अवधारणा और शैली तीनों तलों पर समृद्ध किया है, आगे बढ़ाया है। उन्होंने दर्शन को नयी ताजगी, मोहक भंगिमा, समन्वयवादी सरोकार, सर्वजन सुलभता तथा वैश्विक सुगंध दी है। इन सबके कारण ही उनका दर्शन बासी, शुष्क और नीरस नहीं होकर ताजा, नर्म और सरस है तथा जीवन के सभी पहलुओं को अपने में समेट कर आमजन से जुड़ पाने में सफल हुआ है।

यह सफलता इसलिये भी प्रभावकारी हो पाती है कि ओशो ने दर्शन को न केवल व्यापक विस्तार दिया है, बल्कि तलीय गहराई भी दी है। इसीलिए जहाँ उनके दर्शन में अर्थ, काम, नीति, शिक्षा, समाज, विज्ञान और राजनीति जैसे बाह्य विविध प्रसंगों पर विवेचन उपलब्ध होता है, वहीं अपने भीतर जाकर धर्म धारण करने, आत्मा का बोध प्राप्त करने तथा स्वयं का साक्षात्कार करने की अनिवार्यता का प्रतिपादन भी मिलता है।

परंतु इतना सब होने के बावजूद यदि उन्हें मुखपृष्ठ पर नहीं रखा गया तो इसका एक अनुचित कारण तो काम, अर्थ, नैतिकता आदि से संबंधित अपनी यथार्थपरक स्थापनाओं के कारण उनका विवादास्पद हो जाना रहा, एवं दूसरा आधारभूत कारण उनका जीवन से जुड़े तमाम विषयों पर गझिन बुनावट के साथ विशद-व्यापक ढंग से विचार किया जाना रहा है। उनके उस सघन विस्तार में से दर्शन की परिधि में आने वाली अवधारणाओं को अलगा पाना मुमकिन नहीं हुआ। मेरी इस पुस्तक 'ओशोः हाशिए पर मुखपृष्ठ' में यही किया गया है। इसलिए इसमें उनके जीवन, आश्रम और अन्य विवादों के संबंध में कोई चर्चा न करके केवल उनके दर्शन से जुड़े तत्वों को शामिल किया गया है ताकि यह पुस्तक उन्हें हाशिए से उठाकर मुखपृष्ठ पर लाने का प्रस्ताव बन सके। इस हेतु ठोस आधार तैयार कर सके।

इस पुस्तक के तीन खंडों में कुल दस आलेख हैं, जिनके द्वारा ओशो की दार्शनिक अवधारणाओं, परंपरागत संबद्धता तथा भाषायी सरोकारों का विवेचन करने के साथ-साथ काम, नया मनुष्य तथा धर्म के प्रसंग में क्रमशः फ्रायड, अरविन्द तथा जे. कृष्णमूर्ति के साथ उनके विचारों का अंतर स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार इसमें स्वतंत्र और तुलनात्मक दोनों प्रकृति के आलेख शामिल किये गये हैं और यह प्रतिपादित किया गया है कि मूलतः दार्शनिक होने के कारण ओशो के दर्शन पर ही लिखा जाना सर्वाधिक जरूरी था, जो अब तक नहीं हुआ था। यह पुस्तक इस जरूरत को पूरा करती है। अतः इस पुस्तक के हवाले से आप थोड़ी देर ओशो के साथ रहें। बगैर किसी पूर्वाग्रह के उन्हें सुनें, गुनें और सहजता से उन्हें स्वीकार करें। निष्पक्षता से उन पर विचार करें।

-सरोज कुमार वर्मा

मो0 न0. 9835856030

प्रकाशक- अनुज्ञा बुक्स, शाहदरा, दिल्ली- 110 032, वर्ष- 2022, मूल्य- 499/-

इस स्तंभ में प्रत्येक माह एक कहानी शेयर करेंगे जो हर उम्र वाले बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को प्रेरणा देगी।

बंदरिया से शादी

—स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

एक प्राचीन लोक कथा है कि किसी आदिवासी गाँव में भोला नामक एक जवान लड़का रहता था जो ढोरों को चराया करता था। जिस मैदान में वह अपने ढोर चराता था वहां उसने यह देखा कि रोज दोपहर में एक तय समय पर एक बंदरिया मैदान से गुजरकर झुरमुटों में पानी के कुंड तक जाती थी. उसे इस पर अचरज हुआ कि वह कैसी बंदरिया है और इस तरह रोज एक ही समय पर दबे-छुपे कुंड तक क्यों जाती है! उसने यह तय किया कि वह अगले दिन छुपकर इस बात का पता लगायेगा। अगले दिन जब बंदरिया मैदान से गुजरी तो उसने दबे पाँव उसका पीछा किया और झाड़ियों में छुपकर उसे देखने लगा। उसकी आँखें यह देखकर फटी रह गईं कि कुंड के पानी में उतरने से पहले बंदरिया ने अपनी खाल उतार दी और वह अपूर्व सुंदरी में बदल गई! नहाने के बाद वह दिव्य अप्सरा कुंड से बाहर आई और बंदरिया की खाल पहन के वापस गाँव की और चल दी। भोला ने यह देखने के लिए उसका पीछा किया कि वह कहां जाती है। उसने उस मदारी के घर का पता लगा लिया और वापस काम पर लौट गया।

उन्हीं दिनों लड़के के माँ-बाप उसकी शादी का विचार कर रहे थे और उसके लिए एक लड़की ढूंढ़ रहे थे। भोला ने अपने माँ-बाप से कहा कि वह शादी करेगा तो एक बंदरिया से ही! बंदरिया से शादी... घर में तो हंगामा हो गया! आस पड़ोस वालों ने इस बात का भरपूर मजा लिया। लेकिन जवान हो चुके लड़के पर कब किसका जोर चला है! धीरे-धीरे सब लोग यह बोलने लगे कि इस दीवाने लड़के में एक बंदर की आत्मा है और उसके लिए बंदरिया ही ठीक रहेगी।

भोला के माँ-बाप ने उससे पूछा कि क्या उसकी नजर में कोई खास बंदरिया शादी के लायक है। लड़के ने उन्हें उस आदमी का नाम बता दिया जिसके घर में वह बंदरिया रहती थी। माँ-बाप उस आदमी के घर रिश्ते की बात करने के लिए गए। बंदरिया के मालिक ने भी इस बात की खूब मौज ली कि कोई उसकी बंदरिया से शादी करना चाहता था लेकिन अंततः वह मदारी बंदरिया के बदले कुछ दहेज की रकम तय करके अपनी बंदरिया का हाथ लड़के के हाथ में देने के लिए राजी हो गया।

मुहूर्त के दिन नाचते-गाते हुए गाँव के लोग शादी के लिए आये। शादी के लिए आकर्षक पंडाल लगाया गया और स्वागत के लिए कुछ जंगली वानरों, लंगूरों को भी द्वार के पास बिठाया गया। दूसरे गावों से भी लोग फोकट का खाने के लिए आ गए। पूरे रीति-रिवाजों से विवाह संपन्न हुआ। बंदरिया की विदाई की रस्म भी ठीक तरीके से निपट गई।

कुछ दिनों तक लड़का अपनी नवविवाहिता पर नजर रखे रहा। एक रात बंदरिया दबे पाँव उठी और उसने अपनी खाल उतार दी। वह घर से बाहर जाने लगी। लड़का सोने का नाटक करके उसे देख रहा था। जैसे ही वह कमरे से बाहर जाने लगी, लड़का झपटकर उठा और उसने दिव्यात्मा को पकड़ लिया और उसकी खाल उठाकर आग में फेंक दी. सुंदरी अब बंदरिया नहीं बन सकती थी। उसने लड़की की पत्नी बनकर रहना मंजूर कर लिया। उसकी सुन्दरता के चर्चे दूर-दूर तक फैल गए और सबने बंदरिया से शादी करने के लिए भोला की दूरदर्शिता की तारीफ की।

लड़के का एक दोस्त था जिसका नाम होशियार था। जब होशियार ने अपने दोस्त की सुन्दर पत्नी अर्थात भूतपूर्व बंदरिया को देखा तो उसने भी तय कर लिया कि वह भी एक बंदरिया से ही शादी करेगा। इस बार गाँव में किसी को इस बात पर अचरज नहीं हुआ और सब लोग एक बार और बारात में जाने की तैयारी करने लगे। होशियार ने भी अपने लिए एक बंदरिया पसंद कर ली और शादी तय हो गई। शादी के दिन जब बंदरिया को हल्दी और चन्दन का उबटन लगाया जा रहा था तब वह उछल-कूद मचाने लगी। मंडप के नीचे होशियार बंदरिया की मांग में सिन्दूर भरने लगा तो बंदरिया उसका हाथ चबाने के लिए लपकी। थोड़ी खरोंच अवश्य आई, खैर, बीच-बचाव हो गया। विदाई के समय होशियार की दुल्हन अपना बंधन छुड़ाकर भागने लगी। वृक्षों पर छलांगें भरती हुई घने वन में गायब हो गई। सबने होशियार से कहा कि अपनी पत्नी को पकड़कर लाओ। होशियार उसके पीछे-पीछे भागकर पस्त हो गया लेकिन वह उसके हाथ नहीं आई। थक-हारकर होशियार अपनी माला नोचता हुआ, मुकुट उतारकर अपने घर वापस चला गया। थोड़ी सी जो खरोंच लगी थी उसके कारण कुछ दिनों बाद उसे रेबीज का भयावह रोग हो गया और होशियार पागल होकर मरा।

बंदर की खाल जैसा ही मनुष्य का शरीर यानि ऊपरी चोला है। बुद्धि भी आंतरिक वस्त्र से ज्यादा नहीं। बुद्धपुरुष और पंडित, दोनों के वचन एक जैसे हो सकते हैं। कभी-कभी क्या, अक्सर ही जाग्रत व्यक्ति से भी अधिक ज्ञानी शास्त्रज्ञाता प्रतीत होता है। दोनों इंसान की खाल में छिपे हैं, किंतु उनमें बड़ा भेद है, आत्मज्ञ सद्गुरु और शास्त्रज्ञ पुरोहित में जमीन-आसमान का अंतर होता है। एक के भीतर दिव्य चेतन मौजूद है, दूसरे के अंदर केवल बंदर जैसा मन। जो उन्हें नहीं पहचानते, उनकी गति होशियार जैसी होती है। चालाकीपूर्ण विद्वता का जहर फैल जाए तो विक्षिप्तता घटित हो जाती है। दिव्यता से विवाह हो जाए तो भगवत्ता फलित हो जाती है।

प्रेम परमात्मा है

–स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

मां मोक्ष संगीता – ओशो कहते हैं, उनके संन्यासी के दो पंख हो ध्यान और प्रेम। आज हम प्रेम के संबंध में ओशो का क्या नजरिया है उस पर बात करना चाहेंगे आप से। तो पहले प्रेम के अलग–अलग रूप ओशो कैसे बताते हैं उसको समझाने की कृपा कीजिए।

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी– प्रेम के चार रूप तो बहुत स्पष्ट है। ओशो की एक प्रसिद्ध किताब है 'अथातो भक्ति जिज्ञासा' जिसमें उन्होंने शाण्डिल्य सूत्रों पर व्याख्या की है। ओशो कहते हैं चार प्रकार के प्रेम समझना इसमें तीन लौकिक है और एक पारलौकिक है।

प्रथम वे कहते हैं वात्सल्य भाव, करुणा भाव, सहयोग करने की इच्छा, मंगल कामना किसी के लिए, किसी को सपोर्ट करना, समर्थन देना, सहारा देना। जैसे छोटे के प्रति, बच्चों के प्रति, शिष्यों के प्रति, विद्यार्थियों के प्रति, जो हमसे कमजोर हैं उनके प्रति। तो इसमें अहंकार काफी ज्यादा होता है। क्योंकि हम एक ऊंची पॉजिशन में होते हैं और जिसको हम सहयोग पहुंचा रहे हैं वह हम पर आश्रित है।

अब दूसरी सीढ़ी आती है प्रेम की मैत्री भाव। अपने बराबर वालों के प्रति। पति–पत्नी के बीच, प्रेमी–प्रेमिका के बीच, भाई–भाई के बीच, भाई–बहन के बीच, मित्रों के बीच, सहकर्मियों, सहपाठियों के बीच जो हमारे बराबर के हैं। अब हम ऊपर और नीचे नहीं हैं। छोटे बच्चे में, छोटा बच्चा पूरी तरह आश्रित था। जरूर मां उसे प्रेम करती थी बड़ी ममता देती थी, वात्सल्य भाव था, करुणा भाव था लेकिन मां बहुत शक्तिशाली है, बच्चा बहुत कमजोर है। अब बराबर वाले के साथ प्रेम। इसमें अहंकार और कम होगा मैत्री भाव में। अन्यथा अहंकार का संघर्ष होगा। इसलिए हम देख रहे हैं कि प्रेम संबंध में जो बराबर वालों के साथ है एक कलह और क्लेश भी हमेशा चलती है। उसका कारण 50 परसेंट प्रेम है, 50 परसेंट अहंकार है। पहले वाले में वात्सल्य अहंकार बहुत घना था, अब दूसरे वाले में पचास–पचास प्रतिशत बचा। तो जितना प्रेम है उतना सुख–शांति मिलेगी और जितना अहंकार है उससे क्लेश और दुख भी मिलेगा।

फिर प्रेम का तीसरा रूप है अपने से बड़ों के प्रति। हम जिन्हें आदर देते हैं, सम्मान करते हैं, जिन पर श्रद्धा रखते हैं, जिन पर हमें भरोसा है, माता-पिता हैं, शिक्षक हैं, बुजुर्ग जन हैं, गुरु जन हैं इनके प्रति श्रद्धा का भाव। अब प्रेम एक सीढ़ी और ऊपर चढ़ा। अब हमें झुकना होगा, अब हम समर्पित होंगे, अब हमें भरोसा करना होगा। कोई हमसे ज्यादा समझदार है, कोई हमसे ज्यादा आगे है, कोई हमसे ज्यादा अनुभवी है। अब हम उसकी बात सुनकर चलेंगे। निश्चित रूप से अहंकार को झुकना होगा। तो श्रद्धा भाव में अहंकार बहुत कम बचता है।

अब इसके आगे चौथी सीढ़ी है प्रेम की – भक्ति भाव। श्रद्धा किसी व्यक्ति के प्रति थी, अब यही प्रेम और आगे बढ़कर समष्टि के प्रति लग जाए। समस्त अस्तित्व के प्रति कह लो संपूर्ण जीवन के प्रति। इसका नाम है भक्ति, डिवोशन। तो श्रद्धा एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। प्रेम सीढ़ियों से चढ़ता हुआ धीरे-धीरे, धीरे-धीरे लौकिक से पारलौकिक हो जाता है। श्रद्धा को गौणिय भक्ति भी कहा जाता है अन्य शब्दों में और समष्टि के प्रति अर्थात् संपूर्ण जीवन के प्रति प्रेम को पराभक्ति कहा जाता है। तो प्रेम की ये चार सीढ़ियां समझ लें।

मा मोक्ष संगीता- लकिक प्रेम के संबंध में ओशो के आस-पास कई सारी कांट्रोवर्सिज उठी, वह क्यों उठी या ऐसा क्या उन्होंने अलग करने की कोशिश की इस लौकिक प्रेम के संबंध में?

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी- पुराने धार्मिक लोगों ने प्रेम को इंकार कर दिया था। एक प्रकार से जीवन के ही विरोधी थे। वे त्याग सिखाते थे परिवार छोड़ दो, घर छोड़ दो, भाई-बहन छोड़ दो, माता-पिता को छोड़ दो, पत्नी, बच्चों को छोड़ दो भाग जाओ। जंगल में, गुफा में, एकांत में जाकर बैठो। पुराने धर्म यह सिखाते थे। इसके भिन्न-भिन्न रूप हम अलग-अलग धर्मों में देख सकते हैं। कुल मिलाकर दे आर लाईफ निगेटिव, जीवन विरोधी थे। प्रेम जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। जीवन विरोधी थे तो प्रेम विरोधी थे, इसलिए परिवार के विरोधी थे, समाज के विरोधी थे--एकांत में जाकर रहो।

ओशो चूंकी जीवन के पक्ष में हैं, उन्होंने अपने धर्म का केंद्र ही जीवन को बनाया। तो वे भला प्रेम के विरोध में कैसे हो सकते हैं? तो प्रेम के इन चारों रूपों को स्वीकार करते हैं, ये सीढ़ियां हैं, सोपान हैं। हम एक-एक सीढ़ी ही चढ़कर जा सकते हैं। अगर हम नीचे के सीढ़ी को इनकार कर दें कि हम इस पर नहीं चढ़ेंगे फिर ऊपर के सीढ़ी पर हम कैसे पहुंचेंगे? तो निश्चित रूप से प्रेम जहां से शुरूआत होगा बहुत अहंकार मिश्रित होगा, वासना मिश्रित होगा, कई और अशुद्धियां उसमें होगी। लेकिन धीरे-धीरे शुद्धिकरण होता जाएगा।

तो प्रेम के सारे रूपों को ओशो ने स्वीकार किया है और उनको सोपान की तरह माना है। आखरी मंजिल तक जाने के लिए। नीचे के सोपान भी जरूरी है। तो यह पहली बार ही ऐसा हुआ, पहले हुए थे और भी लेकिन छोटे रूप में हुआ था। उदाहरण के लिए सूफी फकीर बाईजिद का जिक्र आता है कि एक युवक उसके पास आया बहुत कठोर-सा नजर आ रहा था और वह कहने लगा कि मैं ईश्वर को जानना चाहता हूं, मुझे परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बताएं। बाईजिद ने गौर से देखा और पूछा क्या तुमने जीवन में किसी को प्रेम किया है? उसने कहा नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे सिर्फ परमात्मा से लगाव है और किसी से नहीं। मुझे ईश्वर तक जाने का मार्ग बताइये। बाईजिद ने कहा फिर एक बार सोच लो, माता-पिता को, पत्नी को, बच्चों को, किसी फूल को, किसी वृक्ष को, किसी पशु-पक्षी को कभी किसी से लगाव रहा है? उसने कहा बिल्कुल नहीं। मैं संसार से प्रेम करता ही नहीं हूं। मुझे तो बस परमात्मा से प्रेम है। बाईजिद के आंखों में आंसू आ गए उसने कहा माफ करो, अगर थोड़ा बहुत प्रेम तुममें होता तो मैं उस धारा को बहाकर ले जाता सागर तक। सरिता बन सकती थी। लेकिन तुम बिल्कुल ही चट्टान हो, तुम्हारे चेहरे से ही दिख रहा था पत्थर हृदय, संग दिल। मैं तुम्हें मदद न कर सकूंगा।

तो प्रेम ही प्रार्थना बनता है, प्रेम ही आगे चलकर परमात्मा तक पहुंच पाता है। ईसा मसीह के वचन को देखें, वे कहते हैं परमात्मा प्रेम है। ओशो ने इस वचन को ही पलट दिया। ओशो कहते हैं प्रेम परमात्मा है। जैसे वह कह रहे हैं, जीवन ही है प्रभु वैसे ही उन्होंने प्रेम को भी बहुत महत्व दिया। जीवन का मतलब ही है प्रेम पूर्ण होना। प्रेम के बिना कोई जीवन नहीं हो सकता। जीवन की

शुरूआत ही प्रेम से हुई है, जीवन का मध्य भी प्रेम है, जीवन का अंत भी प्रेम है। तो ओशो ने प्रेम को स्वीकारा, उसके सब रूपों में स्वीकारा निश्चित रूप से उसमें मैत्री भी आ गयी, उसमें प्रेमी–प्रेयसी भी आ गए, उसमें पति–पत्नी भी आ गए। ओशो ने घर–गृहस्थी को संभाला, परिवार को स्वीकारा बड़े पैमाने पर। छोटे पैमाने पर बात हुई थी पहले भी लेकिन कभी विस्तीर्ण रूप उसका प्रगट नहीं हुआ था। उदाहरण के लिए हमारे देश में कबीर साहब पहले व्यक्ति हैं जो घर–गृहस्थी में रहते हुए परमात्मा को पा लिए। उनके बाद गुरु नानक देव जी हैं। उनके बाद गुरु सिख परम्परा के गुरु साहिबान हैं और इस बीच में मध्य युग में बहुत सारे संत हुए जो घर–गृहस्थी में रहते हुए, अपना काम–धाम करते हुए, अपना व्यवसाय नौकरी करते हुए परमात्मा को, परमानंद को पा लिए। उन्होंने जीवन का त्याग नहीं किया।

सौ साल पहले रामकृष्ण परमहंस हुए, शादीशुदा थे। जिंदगी भर अपने पत्नी के संग रहे। परिवार को नहीं त्यागा और परम भक्त हो गए, भगवान स्वरूप हो गए। तो धीरे–धीरे बात बन रही थी ओशो ने इसको एक लॉजिकल कंक्लूजन पर, तार्किक निष्पत्ति पर पहुंचाया कि जीवन ही है प्रभु, यह प्रेम ही है परमात्मा इसका छोड़ना नहीं है, त्यागना नहीं है बल्कि इसको जागरूकता पूर्वक जीना है। ताकी यह शुद्धिकृत हो सके, प्योरिफाईड हो सके। जो–जो अशुद्धियां इसमें मिल गयी है उनसे हम मुक्ति पा सके ताकी शुद्ध प्रेम बचे। वही असली भक्ति है।

आत्मा की अमरता

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

स्कूल में रसायन शास्त्र के अंतर्गत हम सबने डॉल्टन द्वारा स्थापित 'पदार्थ की अविनाशता का नियम' पढ़ा है। जब स्थूल 'मैटर' तक अविनाशी है, एक परमाणु को भी नष्ट नहीं किया जा सकता; तो फिर सूक्ष्म चेतना कैसे विनष्ट होगी!

इसे जानने के लिए केमिस्ट्री या फिजिक्स की प्रयोगशाला में जाने की जरूरत नहीं है। स्वयं के अंदर अंतरात्मा में ध्यानस्थ होने की आवश्यकता है– योग के प्रयोगों से गुजरना होगा।

'इटरनल अवेयरनेस शिविर' में शामिल होकर इस भीतरी सचाई का, अमृत चैतन्य का ज्ञान फलित होता है। अन्य शिविरों में खुद के पिछले जन्मों की याद करके भी प्रमाण मिल जाते हैं। निवेदन है कि सदगुरु ओशो की एक किताब पढ़िए– 'मैं मृत्यु सिखाता हूं'। केवल पढ़ने से भूमिका बनेगी, ध्यान प्रयोग करने से असली बात बनेगी। इस किताब को आप इस लिंक से डाउनलोड कर सकते हैं–

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी की वीडियो

क्या कुण्डलिनी जागने के बाद भी जीवन में दुख, लालच, परेशानी आ सकती है?

मेरा अहंकार किसी के सामने झुक नहीं पाता, क्या करूँ? मन के विभिन्न कर्म, क्या-क्या है?

क्या अल्पायु में मृत्यु का कारण ज्योतिष या भाग्य होता है?क्या ध्यान से गुस्सा ख़त्म होता है?

जीवन में सफलता पाने का सूत्र क्या है?क्या महत्वाकांक्षी (Ambitious) होना गलत है?

जानिए कुण्डलिनी जागरण का क्रम क्या है?सभी चक्रों को कैसे जाग्रत कर सकते है?

क्वोरा प्रश्नोतर

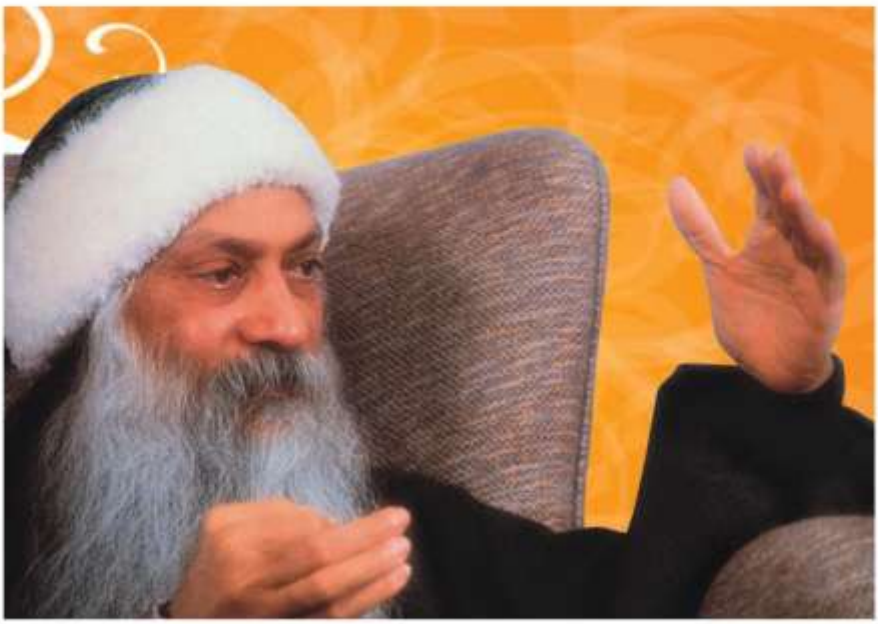

हिंदी में क्वोरा पर पढ़ने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक कीजिए

इस कुटिल संसार की जटिलताओं में कोई व्यक्ति सरलता से कैसे रह सकता है?

जीवन में इतनी उदासी और निराशा क्यों है?

क्या ओशो की दृष्टि में विज्ञान की भांति योग भी मान्यता से नहीं; बल्कि खोज, जिज्ञासा, अन्वेषण से शुरू होता है?

क्या गुरू के बिना परमात्मा उपलब्ध नहीं हो सकता?

क्या अच्छी, सुखद, विधायक अनुभूतियों का स्मरण मूल्यवान है?

सर्वांगीण जीवन का मित्रतापूर्वक स्वीकार

ओशो

प्यारी विमल,
प्रेम।

काम-वासना स्वाभाविक है।
उससे लड़ना नहीं; अन्यथा उसके विकृत-रूप चित्त को घेर लेंगे।
काम (सेक्स) का समझो और काम-कृत्य
(सेक्स-एक्ट) को भी ध्यान का विषय बनाओ।
काम में, संभोग में भी साक्षी (विटनेस) बनो।
संभोग में साक्षी-भाव के जुड़ते ही काम-ऊर्जा
(सेक्स एनर्जी का रूपांतरण प्रारंभ हो जाता है।)
वह रूपांतरण ही ब्रह्मचर्य है।
ब्रह्मचर्य काम का विरोध नहीं--काम-ऊर्जा का ही ऊर्ध्वगमन है।
जीवन में जो भी है उसे मित्रता से और अनुग्रह से स्वीकार करो।
शत्रुता का भाव अधार्मिक है।
स्वीकार से परिवर्तन का मार्ग सहज ही खुलता है।
शक्ति तो सदा ही तटस्थ है।
वह न बुरी है, न अच्छी।
शुभ या अशुभ उससे सीधे नहीं--वरन उसके उपयोग से ही जुड़े हैं।

- पद घुंघरु बांध - 78

ओशो धुनी–1

आओ पुकारें ओशो ओशो! प्राणों से प्यारे ओशो ओशो
आओ पुकारें ओशो ओशो! हम हैं तुम्हारे ओशो ओशो।
चांद हमारे ओशो, सूर्य हमारे ओशो; आंखों के तारे ओशो!
ध्यान हमारे ओशो, ज्ञान हमारे ओशो; जीवन हमारे ओशो!
गीत हमारे ओशो, मीत हमारे ओशो; दिल के सहारे ओशो!
आनंद हमारे ओशो, प्रेम हमारे ओशो; उत्सव हमारे ओशो!
गुरु हमारे ओशो, प्रीतम हमारे ओशो; गोविंद हमारे ओशो!

ओशो धुनी–2

ओशो, ओशो, ओशो, ओशो, ओशो, ओशो!
मेरे जीवन के हर पल को ज्योतिर्मय कर दो।
हो जीवन से गहरा जीवन, हो रोशन से और भी रोशन
तन–मन के इस दीपक को, चेतन से भर दो।
रैन–दिवस और सांझ–सवेरे, बसे रहे प्राणों में मेरे
हृदय की वीणा के तारों को, तुम झंकृत कर दो।
प्रभु की करुणा बरस रही है, श्रद्धा–भक्ति उमग रही है
धीरे–धीरे और भी हमको, संवेदन कर दो।
बार–बार हम भटक न जाएं, किसी मोड़ पर अटक न जाएं
खो न जाएं, सो न जाएं, जागने का वर दो।
कामना की जंजीरें टूटें, मूर्च्छा के सब बंधन छूटें
मुक्त–गगन में पंख पसारे, उड़ने का बल दो।
बीते हुए को मन न ढोए, भावी के सपने न संजोए
अभी–यहीं–इस पल में जीएं, ऐसा जादू कर दो!

हंस दो जरा...!

- एक महिला के व्रत से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हुए और उस महिला से ५ वरदान मांगने को कहा - महिला -

१. मेरा पति मेरे बिना कहीं न जाए
२. मेरे पति के जीवन में मुझसे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ न हो
३. उसे नींद तभी आए जब मैं उसके बगल में होउं
४. जब सुबह उसकी आंख खुले वो सबसे पहले मुझे देखे और
५. अगर मुझे एक छोटी-सी खरोंच भी आ जाए तो वो दर्द से कराह उठे।
भगवान ने कहा तथास्तु। और वो औरत स्मार्ट फोन में बदल गई।

- एक लड़का एक सुंदर लड़की को बड़ी देर से घूर रहा था..
लड़की (गुस्से में): क्या देख रहे हो?
लड़का (हड़बड़ी में): देख रहा हूँ कि अगर तुम मेरी अम्मा होती तो मैं भी सुन्दर होता..!

- भिखारी - ऐ भाई एक रुपया देदे, तीन दिन से भूखा हूँ।
राहगीर - तीन दिन से भूखा है तो एक रुपए का क्या करेगा..?
भिखारी - वजन तोलूंगा कितना घटा है..!!

- बंता ने हजामत की दुकान खोली।
एक ग्राहक शेव कराने आया।
बंता: मूंछ रखनी है?
ग्राहक: हां।
बंता ने ग्राहक की मूंछ काट कर उसके हाथ में देते हुए: लो रख लो, जहां रखनी है।

- पत्नी बीमार पति को डाक्टर के पास ले गयी..
डाक्टर ने कहा - इनको अच्छा खाना दो, हमेशा खुश रखो, घर की कोई भी प्राब्लम इनसे डिसकस ना करो, फालतू की फरमाइशें करके इनकी चिंताये मत बढ़ाओ तो ये छ महीने में ठीक हो जायेंगे..
रास्ते में पति ने पत्नी से पूछा - क्या कहा डाक्टर ने?
पत्नी बोली - डाक्टर ने जवाब दे दिया है

- दो आदमी शराब के नशे में धुत्त होकर रेल की पटरियों के बीचों-बीच जा रहे थे.
पहला : हे भगवान, मैंने इतनी सीढ़ियां पहले कभी नहीं चढ़ीं।
दूसरा : अरे सीढ़ियाँ तो ठीक हैं, मैं तो इस बात को लेकर हैरान हूं कि। हाथ से पकड़ने के लिए रेलिंग कितने नीचे लगी हुई हैं

- टीचर : तुम परिंदो के बारे में सब जानते हो ??
संजू : हाँ टीचर : अच्छा ये बताओ कौन सा परिंदा उड़ नहीं सकता ??
संजू : मरा हुआ परिंदा

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

Date	Program	Place	Contact
14-18 Feb	ओशो शिव सूत्र साधना विज्ञान भैरव तंत्र की विधियों पर आधारित	Mechinagar Muncipality 7, Jhapa, Nepal	+977 9852687502 +977 9842634691
20-25 Feb	बुद्धं शरणं गच्छामि शिविर चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग तथा ध्यान पर आधारित	Online	Osho Fragrance online Numbers
20-24 Feb 20th eve- 24th noon	बुद्धं शरणं गच्छामि शिविर चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग तथा ध्यान पर आधारित	Stone Age Resort, Sangkhola Singtam, Nearby Gangtok, Sikkim	8250521088 9800846363 9679150753
6-11 Mar	सुरति सबद योग साधना शिविर ओंकार नाद का अनुभव	Online	Osho Fragrance online Numbers
13-16 Mar	गीता ध्यान यज्ञ अध्याय-16 साक्षीभाव का अनुभव	Osho Pyramid Gokulam Farm & Resort, Bardoli kamrej road, Mota, Surat, Gujarat	9374718325 9327799399
20-25 Mar	ओशो 'अंतर्यात्रा' शिविर शरीर की सम्यकता, मन-साक्षात्कार, हृदय-वीणा के सूत्र, 'मैं' से मुक्ति की ओर	Online	Osho Fragrance online + offline Numbers
27 Mar -1 Apr	इटरनल अवेयरनेस रिट्रीट अमृत चैतन्य का अनुभव	Online	Osho Fragrance online + offline Numbers
10-15 Apr	ओशो महावीर रिट्रीट ओशो की दो प्रवचनमालाओं 'महावीर वाणी' तथा 'जिन सूत्र' पर आधारित साधना	Online	Osho Fragrance online Numbers
24-29 Apr	ताओ साधना शिविर परम शांति की अनुभूति	Online	Osho Fragrance online Numbers
8-13 May	दुख मुक्ति शिविर दुख के कारणों की समझ और निवारण के उपाय	Online +Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
7May	माँ अमृत प्रिया जी का जन्मोत्सव	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
15-20 May	उत्सव आमार जाति,आनंद आमार गोत्र ध्यान साधना शिविर आंतरिक आनंद का अनुभव, उत्सव का प्रकटीकरण	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
29 May-3 June	कहे कबीर दीवाना कर्म, ज्ञान एवं भक्ति की त्रिमूर्ति संत कबीर के संग दीवानगी के अलौकिक लोक में	Online	Osho Fragrance online Numbers
12-17 June	ओशो जीवन-कला परिवार जनों के साथ प्रेम व स्वतंत्रता के संग आनंद पूर्वक जीने की कला	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
17 June	स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी का जन्मोत्सव	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
19-24 June	काम-क्रोध मुक्ति शिविर नकारात्मक से सकारात्मक भावनाओं की ओर सफर	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
3 July	गुरु पूर्णिमा उत्सव	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
3-8 July	कैवल्य साधना शिविर ब्रह्म ज्ञान का अनुभव	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers
10-15 July	महागीता साधना शिविर परम साक्षी का अनुभव	Online + Rajneesh Dhyan Mandir, Murshidpur, Haryana	Osho Fragrance online + offline Numbers

मार्च, मई, जून और जुलाई में श्री रजनीश ध्यान मंदिर, सोनीपत में आयोजित किए जा रहे ऑफलाइन कार्यक्रमों के लिए, हमें पहले ही बहुत सारे पंजीकरण केलिए नाम प्राप्त हो चुके हैं। चूंकि सीटें सीमित हैं और बुकिंग उपलब्ध सीटों की संख्या से कहीं अधिक हो गई है, हम लॉटरी प्रणाली के माध्यम से सीटों का आवंटन करेंगे। इसलिए कृपया उन सभी कार्यक्रमों के लिए अपना नाम भेजें जिनमें आप शामिल होना चाहते हैं ताकि हम उन्हें लॉटरी में शामिल कर सकें। कृपया तब तक कोई योगदान न करें जब तक आपको हमसे पंजीकरण की पुष्टि नहीं मिल जाती।

Osho Fragrance Numbers: For Online Programs (10 AM to 8 PM)
9464247452, 9311806388, 9811064442 ,9466661255, 9890341020, 8889709895

Contact Numbers for programs in Shree Rajneesh Dhyan Mandir (Monday to Saturday)
(10 AM to 1 PM & 2 PM to 5 PM) 7988229565, 7988969660

जीवन को मस्ती से कैसे भरें?

–मा अमृत प्रिया

बहुत पुराने दिनों की बात है। एक सम्राट अपने जीवन के अन्तिम दिनों की गिनती कर रहा था और बहुत चिंतित भी था। मृत्यु से नहीं, वरन् अपने तीन लड़कों से, जिनके हाथ में उसे राज्य को सौंपना था। वह यह निर्णय करने में असमर्थ था कि किसके हाथ में राज्य की शक्ति दे, क्योंकि शक्ति केवल उन हाथों में ही शुभ होती है, जो शान्त हों। और यह निर्णय बहुत कठिन था कि उन तीनों में शांत कौन है। कैसे परीक्षा हो ?कैसे जाना जा सके कि कौन व्यक्ति उस राज्य के हित में होगा, कौन अहित में ?

कुछ चीजें होती हैं, जो बाहर से नापी जा सकती हैं। लेकिन जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण है, उसे नापने के लिए न कोई बाट है, न कोई तराजू है। कुछ चीजें हैं, जो बाहर से पहचानी जा सकती हैं। लेकिन जीवन में जो भी महत्वपूर्ण है, उसे बाहर से पहचानने का भी कोई उपाय नहीं है। कैसे पहचाना जा सके, कैसे जाना जा सके, क्या रास्ता हो– उस सम्राट ने एक फकीर से पूछा। उस फकीर ने रास्ता बताया। दूसरे दिन सुबह उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया, उन्हें सौ–सौ रुपये दिये और कहा कि तीन जो महल हैं तुम तीनों के नाम––ये सौ–सौ रुपये मैं देता हूं... सौ रुपये में ऐसी चीजें खरीदना कि पूरा महल भर जाये, जरा सी भी जगह खाली न बचे। जो तीनों में सर्वाधिक सफल होगा, वही सम्राट बनेगा, वही राज्य का अधिकारी हो जायेगा।

कुल सौ रुपये! और उन राजकुमारों के महल बहुत बड़े थे। पहले राजकुमार ने सोचा, सौ रुपये से क्या महल भरा जा सकेगा ?वह गया जुआघर में और सौ रुपये उसने दांव पर लगा दिये। हो सकता है जुए में जीत जाए तो फिर बहुत रुपयों से उस महल को भर ले, क्योंकि महल बहुत बड़ा था। सौ रुपये में भरा नहीं जा सकता था। लेकिन जैसे कि अक्सर होता है, जो बहुत पाने के लिए जुआ खेलने जाते हैं, वह भी खोकर लौट आते हैं, जो उनके पास था। वैसे ही वह युवक भी सौ रुपये खोकर घर वापस लौट आया। उसका महल बिल्कुल खाली रह गया।

दूसरे राजकुमार ने सोचा कि सौ रुपये बहुत थोड़े हैं। इतना बड़ा महल हीरे-जवाहरातों से तो भरा नहीं जा सकता। एक ही रास्ता है कि गांव का जो कूड़ा-कचरा बाहर फेंका जाता है, उसे खरीद लिया जाए और महल भर दिया जाए। गांव से जो भी कूड़ा-कचरा बाहर जाता था, सब उसने खरीदना शुरु कर दिया और महल में कूड़े-करकट के ढेर लगा दिये। सारा महल भर गया, लेकिन साथ ही दुर्गंध भी भर गई। उस रास्ते से निकलना भी मुश्किल हो गया।

तीसरे राजकुमार ने भी महल भरा। किससे भरा ?यह थोड़ी देर में स्पष्ट हो सकेगा। तिथि आ गई निर्णय की। परीक्षा के लिए सम्राट आया। पहले राजकुमार का महल खाली था। उस राजकुमार ने कहा, 'क्षमा करें, सौ रुपये बहुत कम थे। मैंने सोचा जुआ खेलूं, शायद जीत जांऊ तो फिर महल को भरूं। मैं हार गया और महल खाली है।'

दूसरे राजकुमार के महल के पास जाकर तो घबराहट हो गयी- इतनी बदबू थी, सारा महल कूड़े-करकट, गंदगी से भरा था! उस राजकुमार ने कहा, कोई और रास्ता न था। सिर्फ कचरा ही खरीदा जा सकता था। सौ रुपये में भला और क्या मिल सकता है ?

फिर सम्राट तीसरे राजकुमार के महल में गया। देखकर दंग रह गये परीक्षार्थी। जो निर्णायक थे, वे देखकर आश्चर्य से भर गये- इतनी सुगंध थी उस महल के पास! फिर वे भीतर गये, रात थी अमावस की। किंतु सारे महल में दीये जलाये गये थे। राजा ने पूछा, 'तूने महल किस चीज से भरा है ?' उस राजकुमार ने कहा- 'प्रकाश से, आलोक से'। कोने-कोने में दीये जले थे! सारा महल प्रकाश से भरा था, और सुगंधियां छिड़की गयी थीं और महल के द्वार-द्वार, खिड़की-खिड़की पर फूल लटकाये गये थे। वह महल सुगंध से और प्रकाश से भरा था। तीसरा राजकुमार सम्राट हो गया। वह उस राज्य का अधिकारी हो गया।

हममें से, बहुत ही मुश्किल से, कोई जीवन का सम्राट हो पाता है! प्रायः तो हमने जीवन को दांव पर लगा रखा है। और हर दांव इस आशा में

कि कुछ मिलेगा तो फिर हम जी लेंगे। और जैसा कि दांव पर होता है, हम हारते ही चले जाते हैं और जीवन का महल अंततः सूना ही रह जाता है। या फिर हममें से कुछ ने कूड़े-करकट से महल को भरने की ठान ली है।

जीवन में जो भी व्यर्थ है, उसी को खरीदकर हम महल में लिए चले आ रहे हैं। जिसका कोई मूल्य नहीं अंतिम रूप से, जिसका कोई अंतिम अर्थ नहीं, उस सब कूड़े करकट को हम घर में इकट्ठा कर रहे हैं! क्योंकि तर्क हमारा यही है कि इतना छोटा सा जीवन, इतनी छोटी शक्ति, इससे महल कोई हीरे-जवाहरातों से भरा नहीं जा सकता। इतनी थोड़ी शक्ति से महल कूड़े से भरा जा सकता है, सो हम कूड़े से भर रहे हैं।

लेकिन हमें पता नहीं कि जिस महल को भरने में हम लगे हैं, उसी महल की दुर्गंध हमें ही उस महल के भीतर रहने नहीं देगी। हमारा जीना ही मुश्किल हो जायेगा और हमारा जीना मुश्किल हो गया है। इतने अशांत हैं, इतने दुखी हैं, इतने चिंतित हैं। क्यों ?

यह चिंता और अशांति आकाश से नहीं आती, न चांद-तारों से आती है। यह चिंता और पीड़ा कहीं से भी नहीं आती है सिवाय उस महल के, जो हमने ही दुर्गंध से, कूड़े करकट से भर रखा है। सारी अशांति, सारी चिंता, सारी पीड़ा वहीं से पैदा होती है। यह हमारे ही श्रम का फल है, यह हमारी चेष्टा है, यह हमारा ही प्रयास है, हमारा ही प्रयत्न है। लेकिन ये दो तरह के राजकुमार तो हमारे भीतर हैं। वह तीसरा राजकुमार हमारे भीतर नहीं है, जो प्रकाश से और सुगंध से जीवन के महल को भर सके।

यहां इस निर्जन में इस सागर तट पर इसलिए आपको बुलावा भेजा है कि इन तीन दिनों में कुछ बातें आपसे करूं कि महल में दीया जल सके, महल में फूल आ सकें। सुगंध भर सके। और शायद परमात्मा के राज्य के आप अधिकारी हो सकें। कौन जानता है, आपको भी

इसलिए नहीं भेजा गया हो ?किसको पता है कि जीवन की इस परीक्षा में कैसे और कौन उत्तीर्ण होगा ?लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि जीवन के अंत तक जो प्रकाश जला लेता है, अपने जीवन के महल को जो सुगंध से भर लेता है, स्वयं जो संगीत बन जाता है, अगर कहीं भी कोई परमात्मा है, अगर कहीं भी कोई आनंद है, अगर कहीं भी कोई संपदा है तो निश्चित ही वह उसका अधिकारी हो जाता है।

इस कहानी से इसलिए शुरु करना चाहता हूं, ताकि आपका जीवनगृह खाली न रह जाये, कूड़े करकट से न भर जाये। प्रकाश से भर सके, संगीत से भर सके।

और इतना स्पष्ट समझ लें कि एक आदमी तीन क्षणों के लिए भी अगर ठीक से जीना सीख जाये तो सारा जीवन ठीक हो सकता है, क्योंकि जो व्यक्ति एक क्षण को भी जीने की ठीक दिशा में कदम उठा ले, जो एक क्षण को भी जीवन के आनंद से संबंधित हो जाए, फिर इस जीवन में दुबारा उस आनंद से अलग होना असंभव है। एक बार भी जो आंख खोल ले और देख ले, फिर इस जीवन में आंख का बन्द हो जाना, और अन्धे रहकर भटकना संभव नहीं है।

– ओशो, 'नेति–नेति'– साधना शिविर के उद्घाटन प्रवचन से

कस्तूरी कुंडल बसे।

ठीक जीवन जीने की कला आ जाए तो पूरी जिंदगी आनंद, उत्सव और अमृत का मस्ती भरा गीत हो सकती है। वह खजाना हमारे भीतर है। ध्यान की कुंजी से वह खुलता है। लेकिन मुश्किल यही है कि हम उसे बाहर खोजते हैं। 'कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढे वन मांहि।' सारी जिंदगी व्यर्थ चली जाती है, मृत्यु के क्षण में ज्ञात होता है कि हाथ बिल्कुल खाली हैं। धन्यभागी हैं वे लोग, जिन्हें जीवनकाल में ही समझ आ जाता है कि महल सूना है। फिर वे आंतरिक तलाश में लग जाते हैं।

जाने किसकी तलाश जारी है, क्या खूब ख्वाहिश हमारी है।
किसी सिंदूर से कभी न भरी, मांग की मांग सदा क्वारी है।।
इस बड़ी दुनिया में जिससे भी मिले, वही इंसान एक भिखारी है।
भरी कितनी मगर ये खाली रही, दिल तो एक जादू की पिटारी है।।
नशा–ए–जुस्तजू में चलती हुई, चुक गई जिंदगी बेचारी है।
पैर तो थक के चूर–चूर हुए, आई नहीं हसरतों की बारी है।।

बड़े मजे की बात है, भीतर जिन्होंने भी खोजा, उन्होंने सदा पाया– 'जिन खोजा तिन पाइयां।' और निरपवाद रूप से जिन्होंने बाहर आनंद खोजा, उन्होंने कभी नहीं पाया– भरी कितनी मगर ये खाली रही, दिल तो एक जादू की पिटारी है।

विभिन्न कार्यक्रम में आप पाएंगे कि आपका महल चैतन्य–संगीत से भरा है, मधुर अनाहत नाद गुंजायमान है। भीतर उस महासंगीत की गहराइयों में उतरने की कला सीखेंगे। आत्मा के अंदर परमात्म–प्रकाश के दर्शन करेंगे। क्रमश : तीसरे राजकुमार की तरह; अमृत, दिव्य सुगंध व स्वाद, दिव्य ऊर्जा व खुमारी, परम–आनंद और परम–प्रेम से जीवन के महल को भरते हुए अंततः आप परम–ज्ञान, कैवल्य–अनुभूति और निर्वाण में डूब जाएंगे। ओशो की सुगंध से अपना जीवन भरने के लिए मैं आपका स्वागत करती हूं – स्वयं की ही खोज के लिए, आत्म–ज्ञान की मंजिल पाने के लिए। उसे रहस्य इसलिए कहते हैं, क्योंकि उसे जानकर भी बताया नहीं जा सकता। एक दिन आप भी कहेंगे–

मुमकिन नहीं कि मौन का पर्दा उठा सकूं;
जो बात राजे दिल की है होंठों पे ला सकूं।
क्या रंग है खुशबू है, बिन मय के खुमारी है;
चाहूं कि जामे मस्ती सभी को पिला सकूं।
कैसा तिलिस्म है तेरी महफिल के नूर में;
जी भर के देखूं पर न जरा भी दिखा सकूं।
एक धुन सी उठ रही है मेरे दिल के साज पर;
खुद सुन सकूं मगर न किसी को सुना सकूं।

भगवान के वचनों ने मेरा अंतस जगा दिया

--हरि ओम शरण

प्रस्तुत लेख प्रसिद्ध भजन गायक श्री हरि ओम शरण जी ने तब लिखा था जब भगवान श्री रजनीशपुरम्, अमेरिका में थे और वहां की सरकार ने उन्हें वीसा देने से इनकार कर दिया था।

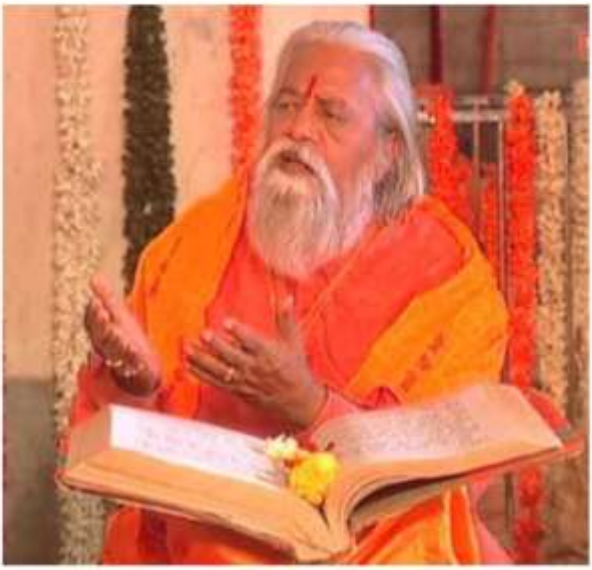

भगवान श्री रजनीश जी के विषय में कुछ कहने की मुझमें जरा भी सामर्थ्य नहीं है। फिर भी कुछ, जो कहूंगा, वो ऐसे ही है, जैसे बालक, पिता की दी हुई मिठाई को, फिर तोतली भाषा में बोलते हुए, फिर से पिता को समर्पित करे! उनकी महानता का पारावार नहीं है! इस युग के एकमात्र, महानतम महान ऋषि, युग-प्रवर्तक हैं वो। इन शब्दों मे वो शक्ति कहां, जो उनकी महिमा का बखान कर सकें।

बम्बई में भगवान के प्रथम प्रवचन होने से पहले मेरे हाथ एक पुस्तक लगी थी, जिसका नाम "क्रांति-बीज", जिसे मैं पहले कितने ही दिन तक इसीलिए नहीं पढ़ पाया कि यह शायद किसी राजनैतिक विषय पर लिखी पुस्तक होगी! मेरी अंतर-प्रवृत्ति हमेशा आध्यात्मिक विषय पढ़ने में रही है। लेकिन पुस्तक में लिखे 'आचार्य रजनीश' नाम ने कुछ ऐसा प्रभावित सा किया, सो एक दिन उसे पढ़ने ही बैठ गया। यूं ही कुछ पृष्ठ उलटे-पलटे कि एक कथा सामने आ गई 'मूर्ति विसर्जन' वाली, शायद सभी उसे जानते हों।

जब एक सर्द अंधेरी रात में, एक साधु मंदिर में ठहरा हुआ था, और सर्दी दूर करने के लिए उसने भगवान की काष्ठ मूर्ति जला डाली थी... सभी ने वो कथा पढ़ी होगी, मैं उसे नहीं दोहराऊंगा, बल्कि उन वाक्यों को जरूर कहूंगा, जिनका प्रभाव मेरे अंतःकरण पर पड़ा। आगे चल कर उस कथा में, साधु उस मंदिर के पुजारी को कहते हैं-

मैं चाहता हूं कि हम मूर्तियों से मुक्त हो सकें, ताकि जो अमूर्त है उसके दर्शन हो सकें। रूप पर जो रुका है, वह अरूप पर नहीं पहुंच पाता। और आकार जिसकी नजर में है, वह निराकार सागर में कैसे कूदेगा?और वह, जो दूसरे की पूजा में है, वह अपने पर आ सके, यह कैसे मुमकिन है?मूर्त को अग्नि दो ताकि अमूर्त प्रगट हो। आकार के बादलों को विसर्जित होने दो ताकि निराकार आकाश उपलब्ध हो। और रूप को बहने दो ताकि नौका अरूप के सागर में पहुंचे। जो सीमातट से अपनी नौका छोड़ देता है, वह अवश्य ही असीम को पहुंचता, और असीम हो जाता है।

'क्रांतिबीज' पढ़ते ही अंतर में क्रांति घटित हुई। आचार्य जी से मिलने की उत्सुकता अन्तर में मचलने लगी। इधर-उधर बहुतों से पूछताछ की, भगवान श्री रजनीश। सारे धर्मों का सार, एक धर्म, जीवंत धर्म। इस धराधाम पर अवतरित हुआ है। कि कहां, कैसे उनसे मिला जा सकता है?वो कहां रहते हैं?आदि... आदि... । किसी ने ठीक कुछ उत्तर नहीं दिया। फिर तो क्रांतिबीज ही एकमात्र उनसे भेंट थी मेरे लिए।

मेरे हर प्रश्न का उत्तर मुझे उस पुस्तक में ही मिल गया। जिन प्रश्नों को मैं जाने कहां कहां जाकर साधु संतों और योगियों से पूछा करता था, लेकिन कोई भी मेरे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाया। वे सभी निरुत्तर प्रश्न रजनीशजी के प्रवचनों में पूरे हुए।

मैं समझता हूं यह सौभाग्य बम्बईवासियों को अधिक मिला, क्रासमैदान में लगातार भगवान के प्रवचन होने लगे, हजारों की संख्या में पिपासुजन वहां पहुंचने लगे। मैं हमेशा सबसे पहले जाकर आगे अपना आसन जमा लेता था, जहां से भगवान का दर्शन भी भली प्रकार हो, और सुनने का आनन्द भी मिले। और कभी-कभी तो भजन गाने के उद्देश्य से मैं स्टेज पर भगवान के निकट भी बैठा हूं, ये मेरा परम सौभाग्य था। मैंने निम्नलिखित भजन तथा कई संतों के पद भी वहां गाए थे-

ये तन मन जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाए रे!

ये गर्व भरा मस्तक मेरा, प्रभु चरण धूल तक झुकने दे!

जाग सुरति, अब काहे को सोवै! (कबीर)

आवै न जावै, मरै नहीं जन्मै, सो ही नित पीव हमारा हो! (कबीर)

अब मरैं, मरिहैं संसारा! (कबीर)

और तभी, उन्हीं दिनों, भगवान श्री का खलबली मचा देने वाला प्रवचन हुआ, जिसका शीर्षक था 'क्या ईश्वर मर गया है?अगर नहीं मरा हो, तो उसे मार देना चाहिए।' लोग इस शीर्षक से चौंके और प्रतिदिन से अधिक संख्या में, क्रासमैदान में एकत्रित हुए। कई महात्मा भी चोरी छिपे भगवान को सुन रहे थे, ये मैंने देखा... कि देखो आज आचार्य क्या कहेंगे! जनता बहुत उत्सुक थी।

-

भगवान की प्रवचन शैली बड़ी अद्भुत, बड़ी निराली, वाणी में एक ओज-आकर्षण। बात हमेशा कहानी से शुरू करते थे, ताकि गहन से गहन विषय भी श्रोता आसानी से आत्मसात कर लें।

उस दिन उन्होंने हजारों श्रोताओं की आंतरिक आंखों को एक झटका देकर खोल दिया। मैं भी वहीं था, मैं भी तो सोया-सोया ही तब तक सारे कार्य करता था। भगवान ने कहा : कि जिस दिन आदमियों का बनाया भगवान मर जाएगा, उसी दिन वह भगवान प्रगट होगा जो है; सारी सृष्टि का अपना आपा, जो समग्रता में प्रगट है, जो सत्-चित आनंद है।

आज आदमी आदमी से लड़ रहा है, अपना-अपना भगवान लेकर। किसी का भगवान किसी से मिलता नहीं, अलग-अलग हैं रूप सबके। और बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी जा रही हैं। भगवान के नाम पर, धर्म के नाम पर! ये झगड़े कब से चलते चले आ रहे हैं?कब होगा उनका अंत? कब शांति के फूल खिलेंगे इस धरती पर?बहुत दुख उठाए धरती पर रहने वालों ने। धर्म के ठेकेदारों की तो पूछो ही मत, भक्त लड़ रहे हैं, वो मजे में बैठे हैं!

भगवान श्री रजनीश ने सत्य की ओर इशारा किया। परंपराओं के झूठे बंधनों को, सत्यविचार की तेज धार से काट कर फेंक दिया। सभी पंथों की साधना-पद्धतियों का सार निकालकर सबके

आगे रख दिया। समस्त जीवन एक सत्य पर खड़ा है, एक सत्य का एक ही धर्म हो सकता है, अनेक नहीं।

भगवान श्री रजनीश की सांस-सांस में, उठने-बैठने में, चलने-फिरने में, सोने-जागने में, धर्म ही धर्म है। वे स्वयं समग्ररूपेण धर्म-पुरुष हैं। उनका धर्म जीवन-निषेध का नहीं, जीवन-स्वीकार का धर्म है।

पूरे विश्व में हंसता-गाता धर्म, जीवंत धर्म, प्रेममय धर्म उतर सके, कण-कण में, फूलों-फूलों में, पत्तियों-पत्तियों में, आकाश में, नदियों में, पर्वतों में, हवाओं में, जो समग्र है उसकी अनुभूति अंतस में हो जाए। ऐसा अमृतमय सत्यविचार वे अपनी बांसुरी से हर ओर गुंजा चुके हैं, जिसकी गमक, जिसकी मस्ती भरी तान, जिसका प्रेममय रस आज भी बरस रहा है। और पिपासुओं को मदमस्त किये जा रहा है।

सारे धर्मों का सार, एक धर्म रूप, जीवंत धर्म, भगवान श्री रजनीश इस धराधाम पर अवतरित हुआ है।

जो उनके निकट बैठा है उसने भी अपने भीतर के बुझे दीप को प्रज्वलित होते देखा है। जिसने सुना है, वो तो धन्य हो गये हैं। भाग्यशाली हूं मैं, जिसने उस चलते-फिरते हुए धर्म को अपनी आंखों से देखा है, अपने कानों से सुना है, उनकी पवित्र वाणी से झरता अमृतमय वचन जी भर कर पीया है। प्रवचन समाप्त होने पर, प्रणाम करते हुए, उनकी मधुर मुस्कान ने तो सर्वस्व ही लूट लिया है। वे तो तार्थ हैं जिन्हें उनके पावन चरण कमलों में बैठने का सुअवसर मिला है।

बहुत से लोगों का कहना है कि वे अब नहीं बोलते, लेकिन उनका चलना, उठना, बैठना, देखना, ये सब कुछ बोलने से भी अधिक है। अमृत तो बरस रहा है, पीने वालों का दुर्भाग्य! भगवान आज जिस स्थान पर रह रहे हैं, तीर्थ हो गई है वो बंजर धरती, फिर भी देखने वालों को दिखता नहीं। ये उनकी आंखों का दोष नहीं है, अंतर के द्वार बंद हैं। जब कोई भगवान के निकट आयेगा तो ही शायद उनकी दिव्य पा, उनके जन्म-जन्मांतर से बंद द्वार खोल दे, और फिर शायद वे देख सकें, कि वो दिव्य-पुरुष क्या बोल रहे हैं!

टूटे मनुष्य को भगवान ने जोड़ा है। ढीली तारों को कसा है, जिससे कि संगीत के स्वर जग सकें। मधुर रागिनी गूंज सके। देह मन के साथ, मन आत्मा के साथ, आत्मा पूरे अस्तित्व के साथ नाच सके।

भगवान का यही बोलना है कि सभी जीवन एक संगीत हो, जिस संगीत में सभी समाविष्ट हो जायें। कुछ भी निषिद्ध न रहे, कुछ भी वर्जित न रहे, कुछ भी पाप की तरह छोड़ा न जाए। मैं तुम्हारे सारे पापों की ऊर्जा को भी पुण्य की सुवास में रूपांतरित करना चाहता हूं। और उसी को मैं कलाकार कहता हूं, उसी को मैं बुद्धिमान कहता हूं, जो लोहे को सोना बना ले, और जो जहर से औषधि बना ले, और जो मृत्यु से अमृत को निचोड़ ले।

भगवान श्री रजनीश की सांस-सांस में, उठने-बैठने में, चलने-फिरने में, सोने-जागने में, धर्म ही धर्म है। वे स्वयं समग्ररूपेण धर्म-पुरुष हैं।

भगवान के वचनों ने मेरा अंतस जगा दिया है। नींद के मीठे स्वप्न

ही मिट चुके हैं। आनंद ही आनंद अब शेष रहा है। अब तो जो भी गीत हृदय से फूटता है, उससे आनन्द ही झरता है।

कहा कहूं मैं बात अगम की, वाणी रुक रुक जाए रे!
प्रेमाश्रु बह रहे नयन के, मस्तक झुक-झुक जाए रे!!
तिमिर हरण शिव उदित हुआ कालि में भगवान रजनीश है नाम।
जिनकी दिव्याभा से सारी उज्ज्वल हो गई धरा-धाम।।
नमन करूं मैं 'शरण' होये के, शत शत मेरा उन्हें प्रणाम।।

31.10.1983

6-11 जनवरी गुरु हरसहाई, पंजाब में गहन साधना शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। विभिन्न झलकियां लिंक पर उपलब्ध तथा अखबारों की फोटों प्रषित -

ਸ਼ਿਵਰ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਮੌਕੇ ਮੌਜੂਦ ਸਾਧਕ ਤੇ ਸ਼ਿਵਰ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲੈਂਦੇ ਹੋਏ ਸਾਧਕ। ਤਸਵੀਰਾਂ: ਕਪਿਲ ਕੰਧਾਰੀ

ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵਲੋਂ ਲਗਾਇਆ 'ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ' ਸੰਪੰਨ

ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ, 11 ਜਨਵਰੀ (ਕਪਿਲ ਕੰਧਾਰੀ, ਹਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਸੰਧੂ) - ਹਰ ਵਾਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਸ ਵਾਰ ਵੀ ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵਲੋਂ ਛੇ ਰੋਜਾ 'ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ' ਦਾ ਅਯੋਜਨ ਪਿੰਡ ਝੰਡੂ ਵਾਲਾ ਵਿਖੇ ਬਣੇ ਸਟਾਰ ਵਿਲਾ ਰਿਸੋਰਟ ਵਿਖੇ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਦਾ ਸੰਚਾਲਨ ਪਰਮ ਗੁਰੂ ਓਸ਼ੋ ਰਜਨੀਸ਼ ਦੇ ਭਰਾ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਅਤੇ ਸਰਸਵਤੀ ਮਾਂ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਿਆ ਵਲੋਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਵਿਚ ਮੋਗਾ, ਮਲੋਟ, ਫਰੀਦਕੋਟ, ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ, ਮੁੰਬਈ, ਰਾਜਸਥਾਨ, ਦਿੱਲੀ ਆਦਿ ਤੋਂ ਆਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੇ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਨੇ ਆਏ ਹੋਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੂੰ ਮੈਡੀਟੇਸ਼ਨ ਅਤੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਛਿੱਪੇ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਇਸ ਭੱਜ-ਦੌੜ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਮਨ ਦੀ ਸ਼ਾਂਤੀ ਲਈ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ ਦਾ ਵੀ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਕੈਂਪ ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਉਪਰਾਲਾ ਕੀਤਾ।

ਅਜੀਤ
12-Jan-2023
Page: 7
http://epaper.ajitjalandhar.com/edition/20230112/15/7.cms

दैनिक सवेरा टाइम्स

ओशो फ्रेगरैंस का गहन साधना शिविर सम्पन्न

अध्यात्म से ही मानव को मोक्ष का मार्ग प्राप्त हो सकता है: स्वामी शैलेन्द्र

शिविर में स्वामी शैलेन्द्र व सरस्वती मां अमृत प्रिया साधकों के साथ बातचीत करती हुई और शिविर में ध्यान लगाते हुए साधक।

सवेरा न्यूज/जम्मा/मुकेश

गुरुहरसहाय, 11 जनवरी: लोगों को तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाने और अध्यात्म से जोड़ने के उद्देश्य को लेकर ओशो फ्रैगरैंस टीम की तरफ से 6 दिवसीय गहन साधना शिविर का आयोजन गुरुहरसहाय में किया गया, जिसका संचालन परम गुरु ओशो रजनीश के भाई स्वामी शैलेन्द्र व सरस्वती मां अमृत प्रिया की तरफ से किया गया। मालूम हो कि इस 6 दिवसीय साधना शिविर में मोगा, मलोट, फरीदकोट व फिरोजपुर के साधकों ने हिस्सा लिया और अध्यात्म की महत्वता को समझा। इस दौरान स्वामी शैलेन्द्र जी ने कैंप में हिस्सा लेने वाले साधकों को ध्यान लगाने की क्रिया सिखाते हुए कहा कि अध्यात्म से ही मानव मोक्ष के मार्ग की प्राप्ति कर सकता है। उन्होंने कहा कि अध्यात्म के जरिए सभी मानव मन व आत्म को शांत करके परमात्म को पा सकते है। स्वामी जी ने कहा कि इस भाग-दौड़ वाली जिंदगी में मानव शांति के लिए कई तरह के तरीकों को अपनाता है, लेकिन उसे शांति प्राप्त करने के लिए ध्यान लगाना जरुरी है। उन्होंने कहा कि ओशो फ्रैगरैंस टीम लोगों को तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाने और अध्यात्म से जोड़ने के लिए ही समय-समय पर इस तरह के शिविरों का आयोजन करती है। अंत में गुरुहरसहाय की ओशो फ्रैगरैंस टीम ने शिविर में हिस्सा लेने वाले सभी साधकों का आभार व्यक्त किया।

ਛੇ ਦਿਨਾਂ 'ਓਸ਼ੋ ਫ਼੍ਰੈਗਰੈਂਸ' ਕੈਂਪ ਸਮਾਪਤ

ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ, 11 ਜਨਵਰੀ (ਗੁਰਮੇਲ ਵਾਰਵਲ) : ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵੱਲੋਂ ਛੇ ਰੋਜਾ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਦਾ ਅਯੋਜਨ ਸਟਾਰ ਵਿਲਾ ਰਿਜੋਰਟ ਵਿਖੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਦਾ ਸੰਚਾਲਨ ਪਰਮ ਗੁਰੂ ਓਸ਼ੋ ਰਜਨੀਸ਼ ਦੇ ਭਰਾ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਅਤੇ ਸਰਸਵਤੀ ਮਾਂ ਅਮ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਿਯਾ ਵੱਲੋਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਇਸ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਵਿੱਚ ਮੋਗਾ, ਮਲੋਟ , ਫਰੀਦਕੋਟ, ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ ਮੁੰਬਈ ਰਾਜਸਥਾਨ ਦਿੱਲੀ ਆਦਿ ਤੋ ਆਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੇ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਨੇ ਆਏ ਹੋਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੂੰ ਮੈਡੀਟੇਸ਼ਨ ਅਤੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਨਾਲ ਅਪਣੇ ਅੰਦਰ ਛਿਪੇ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਭਜ ਦੌੜ ਦੀ ਜਿਦੰਗੀ ਵਿੱਚ ਮਨ ਦੀ ਸ਼ਾਤੀ ਲਈ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਸ ਟੀਮ ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ ਦਾ ਵੀ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਕੈਂਪ ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਨਾਉਣ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਉਪਰਾਲਾ ਕੀਤਾ।

ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਸਪੋਕਸਮੈਨ
RozanaSpokesman.com

ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵੱਲੋਂ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰਸੰਪਨ

ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ,11 ਜਨਵਰੀ (ਮਨੀਸ਼ ਡਠੇਜਾ) - ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵੱਲੋਂ ਛੇ ਰੋਜਾ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਦਾ ਅਯੋਜਨ ਸਟਾਰ ਵਿਲਾ ਰਿਜੋਰਟ ਵਿਖੇ ਕੀਤਾ,ਇਸ ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਦਾ ਸੰਚਾਲਨ ਪਰਮ ਗੁਰੂ ਓਸ਼ੋ ਰਜਨੀਸ਼ ਦੇ ਭਰਾ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਅਤੇ ਸਰਸਵਤੀ ਮਾਂ ਅਮ੍ਰਿਤ ਪਿਆ ਵੱਲੋਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਇਸ ਸਾਧਨਾ ਸ਼ਿਵਰ ਵਿੱਚ ਮੋਗਾ, ਮਲੋਟ , ਫਰੀਦਕੋਟ, ਫਿਰੋਜਪੁਰ ਮੁੰਬਈ ਰਾਜਸਥਾਨ ਦਿੱਲੀ ਆਦਿ ਤੋ ਆਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੇ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ।ਇਸ ਮੌਕੇ ਸੁਆਮੀ ਸ਼ੈਲੇਂਦਰ ਨੇ ਆਏ ਹੋਏ ਸਾਧਕਾਂ ਨੂੰ ਮੈਡੀਟੇਸ਼ਨ ਅਤੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਸਬੰਧੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ, ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਛਿਪੇ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ,ਇਸ ਭਜ ਦੌੜ ਦੀ ਜਿਦੰਗੀ ਵਿੱਚ ਮਨ ਦੀ ਸ਼ਾਤੀ ਲਈ ਧਿਆਨ ਲਗਾਉਣਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ, ਇਸ ਮੌਕੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਓਸ਼ੋ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਗੁਰੂਹਰਸਹਾਏ ਦਾ ਵੀ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਕੈਂਪ ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਨਾਉਣ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਉਪਰਾਲਾ ਕੀਤਾ।

दैनिक भास्कर फिरोजपुर भास्कर 12-01-2023

6 दिवसीय गहन साधना शिविर संपन्न

गुरु हरसहाय| ओशो फ्रेग्रेंस टीम ने स्टार विला रिजॉर्ट में छह दिवसीय गहन साधना शिविर का आयोजन किया। इस गहन साधना शिविर का संचालन परम गुरु ओशो रजनीश के भाई स्वामी शैलेंद्र और सरस्वती मां अमृत प्रिया ने किया था। इस साधना शिविर में मोगा, मलोट, फरीदकोट, फिरोजपुर, मुंबई, राजस्थान, दिल्ली आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुओं ने भाग लिया। स्वामी शैलेंद्र ने कहा कि ध्यान करने से व्यक्ति अपने भीतर छिपे ईश्वर को पा सकता है। इस मौके उन्होंने ओशो फ्रेग्रेंस टीम गुरु हरसहाय का भी धन्यवाद किया जिन्होंने इस शिविर को सफल बनाने के लिए विशेष प्रयास किया।

ਓਸ਼ ਫਰੈਗਰੈਂਸ ਟੀਮ ਵਲੋਂ 'ਗਹਨ ਸਾਧਨਾ ਕੈਂਪ' ਸੰਪੰਨ

जयपुर में 18 जनवरी 'तनाव मुक्ति' विषय पर प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर सत्र में करीब 350 मित्रों ने भाग लिया। राजस्थान के समाचार पत्रों में ओशो ध्यान शिविर की खबर प्रकाशित हुई। संत दादू दयाल जी की समाधि एवं संत जगजीवन साहिब की साधना स्थली पर महापरिनिर्वाण उत्सव संपन्न हुआ। आज बर्मा में स्वामी गोपाल जी ने और सागर में स्वामी संतोष गुरु ने भी उत्सव आयोजन किया, उनकी तस्वीरें यहां साझा की गई हैं।

संत दादू दयाल जी की समाधि स्थली पर ओशो महापरिनिर्वाण उत्सव संपन्न हुआ। विचित्र संयोगः 18 जनवरी शाम को जयपुर में पब्लिक स्पीच थी। 19 से चतरपुरा आश्रम में शिविर शुरू होना था।

आयोजक ने कहा कि 5।3 दूर, संत दादू दयाल की समाधि और संत जगजीवन साहिब की साधना स्थली है। हम लोग वहां मेडिटेशन, सेलिब्रेशन, और पिकनिक करेंगे। सुबह नौ से लेकर चार बजे तक का समय वहां बिताया। "पिव पिव लागी प्यास" का पांचवां प्रवचन सुना, और उसमें बताई विधि से नादब्रह्म ध्यान किया।

चर्चा के दौरान एक बात उजागर हुई कि "ध्यान योगः प्रथम और अंतिम मुक्ति" में वर्णित नादब्रह्म विधि ओशो की वाणी से नहीं ली गई, बल्कि संपादक ने खुद लिखी है। अनेक महत्त्वपूर्ण बिंदुओं के छूट जाने से वह विधि प्रभावशाली नहीं रही। यही वजह है कि लाखों साधक प्रयोग करके भी ब्रह्म ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

19-22 जनवरी 2023 पंच महाव्रत शिविर का आयोजन ओशो आश्रम, चतरपुरा जयपुर, राजस्थान में किया गया। उस दौरान ओशो नव संन्यास दीक्षा समारोह 21 जनवरी को मनाया गया। जयपुर के स्वामी गोपाल जी, मुकेश जी, कमल जी, अमृतानंद जी एवं सत्यानंद जी भी इस उत्सव की बेला में सम्मिलित हुए।

ओशो ध्यान मंदिर चतरपुरा में 'ओशो महानिर्वाण' दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है

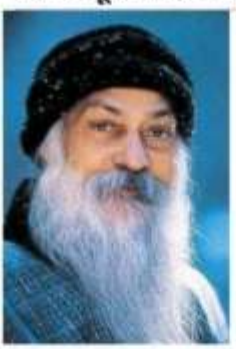

आयुष-अंतिमा नेटवर्क

जयपुर (योगेश शर्मा)। ओशो ध्यान मंदिर चतरपुरा में ओशो महानिर्वाण दिवस पर तीन दिवसीय पंच महाव्रत ध्यान शिविर आयोजित किया जा रहा है। स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी एवं मां अमृत प्रिया द्वारा शिविर का संचालन किया जा रहा है। ओशो आश्रम के संचालक स्वामी अमृतानंद सरस्वती जी ने बताया कि ध्यान शिविर में स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी द्वारा साधकों को ओशो निर्देशित ध्यान की विभिन्न विधियां करवाई जाएगी, यह सारी विधियां वैज्ञानिक हैं और मनुष्य के बेहतर विकास के नए आयाम खोलती हैं। ये विधियां आत्म-रुपांतरण में सहायक है। इन विधियों से व्यक्ति के जीवन मे आनंद एवं उल्लास का संचार होता है। ध्यान की ये ऐसी सुंदर, व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक विधियां हैं, जिसे कोई भी साधक न केवल सरलता से कर सकता है बल्कि उनसे मिलने वाले अभूतपूर्व लाभ को भी प्राप्त कर सकता है।

ओशो ध्यान मंदिर चतरपुरा में ओशो महानिर्वाण दिवस आज

जयपुर। आज से ओशो ध्यान मंदिर चतरपुरा में ओशो महानिर्वाण दिवस पर तीन दिवसीय पंच महाव्रत ध्यान शिविर आयोजित किया जा रहा है। स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी एवं मां अमृत प्रिया द्वारा शिविर का संचालन किया जा रहा है।ओशो आश्रम के संचालक स्वामी अमृतानंद सरस्वती जी ने बताया कि ध्यान शिविर में स्वामी शैलेंद्र सरस्वती जी द्वारा साधकों को ओशो निर्देशित ध्यान की विभिन्न विधियां करवाई जाएगी यह सारी विधियां वैज्ञानिक हैं और मनुष्य के बेहतर विकास के नए आयाम खोलती हैं। ये विधियां आत्म- रुपांतरण में सहायक है। इन विधियों से व्यक्ति के जीवन मे आनंद एवं उल्लास का संचार होता है। ध्यान की ये ऐसी सुंदर, व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक विधियां हैं, जिसे कोई भी साधक न केवल सरलता से कर सकता है बल्कि उनसे मिलने वाले अभूतपूर्व लाभ को भी प्राप्त कर सकता है।

अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र

Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895

Youtube page - Rajneesh Fragrance

Facebook page - Rajneesh Fragrance

Instagram - Osho Fragrance

Twitter - Rajneesh Fragrance

oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App•••

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.

Download Osho Hindi & English Books from the link -

contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध के पिछले अंक...

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनो और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।

नियमित रुप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतू, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।

अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप ओशो सुगंध नियमित प्राप्त करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
ऊपर दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से आपका संदेश
हम तक पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक भेजने के लिए
आप का मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

ओशो फ्रैगरेन्स की हिन्दी-साहित्य लिंक

सांस से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 1 में 1-28 विधियां

श्रवण से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 2 में 29-56 विधियां

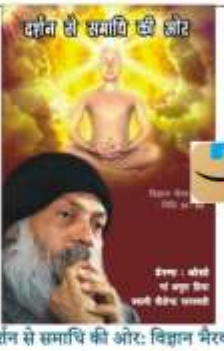

दर्शन से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 3 में 57-84 विधियां

भाव से समाधि की ओर: विज्ञान भैरव तंत्र भाग 4 में 85-112 विधियां

हास्य-फुलझड़ियां: मुल्ला नसरुद्दीन के प्रेरणादायी लतीफे

जीवन - हंसने-हंसाने का अवसर (Hindi Edition)

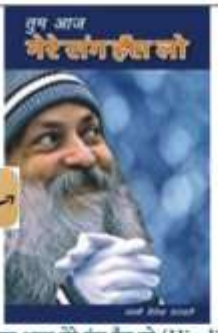

तुम आज मेरे संग हँस लो (Hindi Edition)

एक कप चाय: ओशो-दृष्टि से ओत-प्रोत प्रेरक कथाएं

मा प्रेम के राही: बाउल फ़कीरों के संग तीर्थ यात्रा - मा अमृत प्रिया

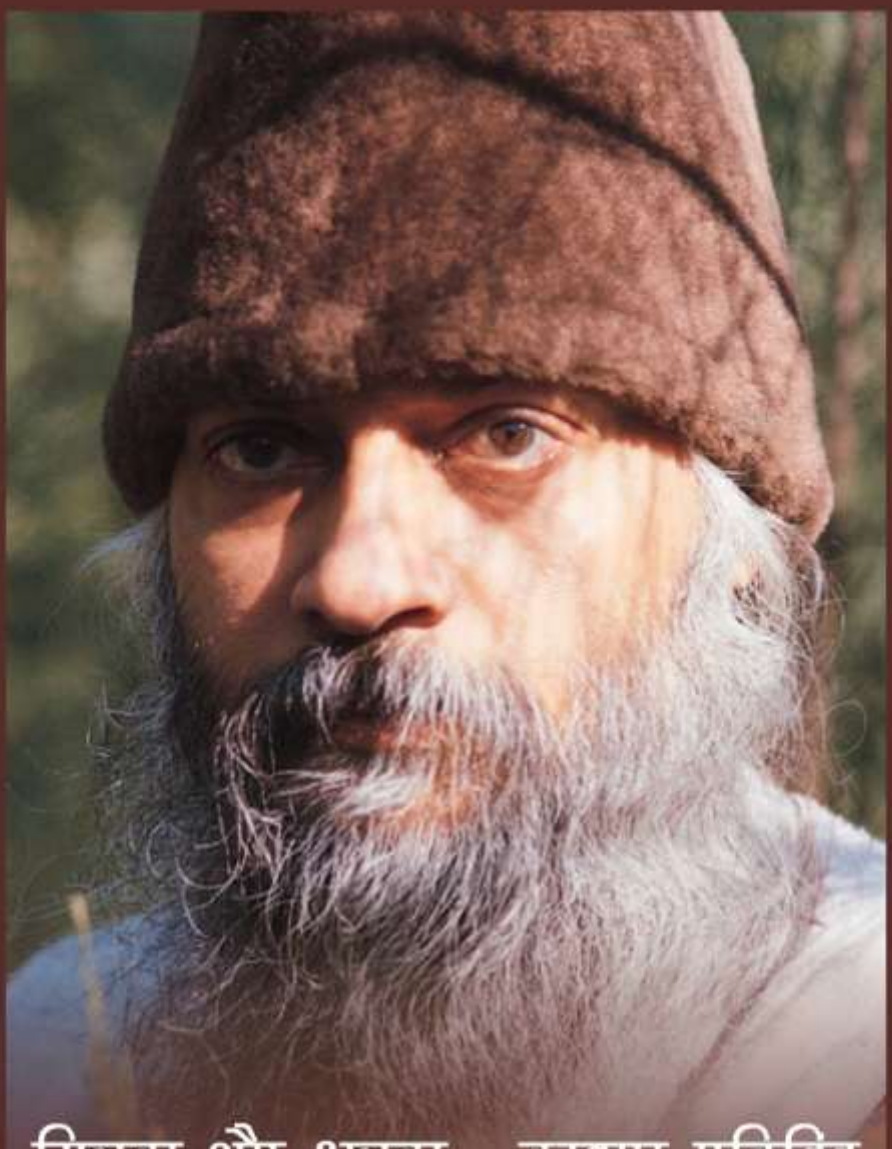

मित्रता और शत्रुता - तुम्हारा प्रतिबिंब

–ओशो

फूलों को सारा जगत फूल है और कांटों को कांटा। जो जैसा है, वैसे ही दूसरे उसे प्रतीत होते हैं। जो स्वयं में नहीं है, उसे दूसरों में देख पाना कैसे संभव है! सुंदर को खोजने, चाहे हम सारी भूमि पर भटक लें, पर यदि वह स्वयं के ही भीतर नहीं है, तो उसे कहीं भी पाना असंभव है।

एक अजनबी किसी गांव में पहुंचा। उसने उस गांव के प्रवेश द्वार पर बैठे एक वृद्ध से पूछा: क्या इस गांव के लोग अच्छे और मैत्रीपूर्ण हैं?उस वृद्ध ने सीधे उत्तर देने की बजाय स्वयं ही उस अजनबी से प्रश्न किया: मित्र, जहां से तुम आते हो वहां के लोग कैसे हैं? अजनबी दुखी और क्रुद्ध होकर बोला: अत्यंत क्रूर, दुष्ट और अन्यायी। मेरी सारी विपदाओं के लिए उनके अतिरिक्त और कोई जिम्मेवार नहीं। लेकिन आप यह क्यों पूछ रहे हैं?वृद्ध थोड़ी देर चुप रहा और बोला: मित्र, मैं दुखी हूं। यहां के लोग भी वैसे ही हैं। तुम उन्हें भी वैसा ही पाओगे।

वह व्यक्ति जा भी नहीं पाया था कि एक दूसरे राहगीर ने उस वृद्ध से आकर पुनः वही बात पूछी: यहां के लोग कैसे हैं?वह वृद्ध बोला: मित्र, क्या पहले तुम बता सकोगे कि जहां से आते हो, वहां के लोग कैसे हैं?इस प्रश्न को सुन यह व्यक्ति आनंदपूर्ण स्मृतियों से भर गया। और, उसकी आंखें खुशी के आंसुओं से गीली हो गईं। वह बोलने लगा: आह, बहुत प्रेमपूर्ण और बहुत दयालु, मेरी सारी खुशियों के कारण वे ही थे। काश, मुझे उन्हें कभी भी न छोड़ना पड़ता! वह वृद्ध बोला: मित्र, यहां के लोग भी बहुत प्रेमपूर्ण हैं, इन्हें तुम उनसे कम दयालु नहीं पाओगे, ये भी उन जैसे ही हैं। मनुष्य–मनुष्य में बहुत भेद नहीं है।

संसार दर्पण है। हम दूसरों में जो देखते हैं, वह अपनी ही प्रतिक्रिया होती है। जब तक सभी में शिव और सुंदर के दर्शन न होने लगें, तब तक जानना चाहिए कि स्वयं में ही कोई खोट शेष रह गई है।